RPSC, RSSB
और राजस्थान में आयोजित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बेहद उपयोगी।

AKSHANSH PUBLICATION

नवगठित 7 संभागों एवं 41 जिलों पर आधारित

राजस्थान का इतिहास

प्रथम संस्करण

अध्यायवार प्रश्नों की व्याख्या

RAJASTHAN PYQ SERIES

आर.ए.एस. (RAS), प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी अध्यापक, सब इंस्पेक्टर (राज, पुलिस), कांस्टेबल, जेल प्रहरी, CET, BSTC, PTET, पटवार, ग्राम सेवक, एल. डी. सी., जूनियर एकाउंटेंट, एग्रीकल्चर सुपरवाइजर, सहायक आचार्य एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक।

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH
PUBLICATION

वाहन चालक, प्लाटून कमांडर, ग्राम विकास अधिकारी, द्वितीय श्रेणी शिक्षक, चतुर्थ श्रेणी, कांस्टेबल, पटवार एवं स्कूल व्याख्याता सहित 2025 तक आयोजित सभी परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों का टॉपिक-वाइज विस्तृत व्याख्या सहित संकलन।

प्लाटून कमांडर	2025	BSTC	2022-2025
वाहनचालक	2025	PTET	2022-2025
उपनिरीक्षक (दूरसंचार)	2025	CET (10+2, स्नातक)	2023, 2024
ग्राम विकास अधिकारी	2021, 2022, 2025	पशु परिचर	2024
Research Assistant	2025	CHO	2024
जनसंपर्क अधिकारी	2025	ANM & Nurse	2024
कृषि अधिकारी	2025	सूचना सहायक	2024
उप कारागार	2025	संगणक	2024
PTI	2024, 2025	सांख्यिकी अधिकारी	2021, 2024
EO/RO	2025	कनिष्ठ लेखाकार	2016, 2024
प्राध्यापक एवं कोच	2025	प्रयोगशाला सहायक	2018, 2022, 2024
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	2025	पुस्तकालय अध्यक्षक	2024
पटवार	2021, 2025	खाद्य सुरक्षा अधिकारी	2024
कॉन्स्टेबल	2022, 2024, 2025	Protection Officer	2023
स्कूल व्याख्याता (1st grade)	2021, 2023, 2025	Asstt. Fire Officer & Fireman	2022
द्वितीय श्रेणी शिक्षक (2nd grade)	2020, 2022, 2025	कम्प्यूटर अनूदेशक	2022
(माध्यमिक शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा विभाग के प्रश्न पत्र)		वनपाल वनरक्षक	2022
तृतीय श्रेणी शिक्षक (3rd grade)	2021, 2022, 2024	पुलिस उपनिरीक्षक (SI)	2018, 2021, 2022
REET PRE. EXAM	2018, 2021, 2024	HM (प्रधानाध्यापक)	2021
स्टेनोग्राफर	2021, 2023, 2024	Highcourt LDC	2017, 2023
Assistant Mining Eng.	2024	RPSC LDC	2011, 2016
Assistant dir. sci. and tec.	2024	RSSB LDC	2018, 2024
RAS	2023, 2024, 2025	प्रवक्ता तकनीकी शिक्षा वि.	2021
जेल प्रहरी	2022, 2025	कनिष्ठ अनुदेशक (इले.)	2019
महिला पर्यवेक्षक	2024, 2025	ARO (agriculture)	2022

RPSC, RSSB एवं अन्य बोर्ड द्वारा राजस्थान में आयोजित विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नों का व्याख्या सहित संकलन

संपादक
आर एस राठौड़ सर

सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, गंगासिंह भाटी
निशांत सोलंकी

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹199

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0053

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ, तथ्य और सूचनाएँ सावधानीपूर्वक सत्यापित की गई हैं। फिर भी यदि किसी जानकारी या तथ्य में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए प्रकाशक, संपादक या मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे।

हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक की सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से तैयार की गई है। यदि किसी प्रकार का कॉपीराइट उल्लंघन सामने आता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

सभी विवादों के निपटारे के लिए न्यायिक क्षेत्र उदयपुर रहेगा।

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

अनुक्रमणिका

01	इतिहास के प्रमुख स्त्रोत	1 - 15
02	प्राचीन सभ्यताएँ एवं पुरातात्विक स्थल	16 - 39
03	जनपद एवं प्राचीन नाम	40 - 44
04	राजपूतों की उत्पत्ति	45 - 47
05	गुर्जर-प्रतिहार वंश	48 - 55
06	चौहान वंश	56 - 73
07	गुहिल वंश	74 - 105
08	राठौड़ वंश	106 - 125
09	कच्छवाह वंश	126 - 141
10	अन्य राजवंश	142 - 154
11	मध्यकालीन प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	155 - 162
12	ब्रिटिशकालीन संधियाँ	163 - 167
13	1857 की क्रांति	168 - 182
14	जनजाति आंदोलन	183 - 191
15	किसान आंदोलन	192 - 206
16	प्रजामण्डल आंदोलन	207 - 220
17	जन-जाग्रति (प्रमुख संस्थाएँ)	221 - 229
18	राजनीतिक चेतना (समाचार पत्र)	230 - 236
19	राजस्थान का एकीकरण	237 - 254
20	प्रमुख व्यक्तित्व	255 - 276

01 इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

◪ **अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत/वैष्णव सम्प्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है-**

ARO (Agri./Plant Patho.) – 29.8:2022

(a) घोसुण्डी अभिलेख
(b) बुचकला अभिलेख
(c) हेलियोदोरस का बेसनगर अभिलेख
(d) घटियाला अभिलेख

उत्तर (a) व्याख्या:–

घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय शताब्दी ई.पू.)

➢ यह राजस्थान में भागवत / वैष्णव सम्प्रदाय के बारे में जानकारी प्रदान करने वाला प्राचीनतम शिलालेख है।
➢ यह शिलालेख चित्तौड़ से सात मील दूर घोसुण्डी गाँव (नगरी) से प्राप्त हुआ था।
➢ यह लेख कई शिलाखंडों में टूटा हुआ है। इसके कुछ टुकडे ही उपलब्ध हो सके है।
➢ इस लेख के अनुसार गजवंश के शासक सर्वतात ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया था।
➢ शिलालेख में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण तथा वासुदेव की मान्यता और अश्वमेध यज्ञ के प्रचलन का वर्णन मिलता है।
➢ वर्तमान में यह शिलालेख उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।
➢ घटियाला अभिलेख (861 ई.) व बुचकला शिलालेख (815 ई.) से गुर्जर-प्रतिहार वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

◪ **निम्नांकित में से कौनसा अभिलेख राजस्थान में भागवत (वैष्णव) धर्म के विषय का उल्लेख नहीं करता है?**

Asst. testing Officer (PWD) - 08.07.2025

(a) बरनाला अभिलेख
(b) बसंतगढ़ अभिलेख
(c) घोसुण्डी अभिलेख
(d) बड़वा स्तंभ अभिलेख

उत्तर (b) व्याख्या:–

➢ राजस्थान में भागवत / वैष्णव सम्प्रदाय के बारे में जानकारी प्रदान करने वाले अभिलेख-
(1) बरनाला अभिलेख
(2) घोसुण्डी अभिलेख
(3) बड़वा स्तंभ अभिलेख

◪ **उस अभिलेख को चिह्नित कीजिए, जो प्राचीन राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय की उपस्थिति के साक्ष्य देता है–**

सांख्यिकी अधिकारी– 20.12.2021

(a) कन्सुआ अभिलेख (b) बरनाला अभिलेख
(c) हर्षनाथ मंदिर की प्रशस्ति (d) आहड़ अभिलेख

उत्तर (b) व्याख्या:–

बरनाला अभिलेख (278 ई.)

➢ यह अभिलेख जयपुर के पास स्थित बरनाला नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जो राजस्थान में वैष्णव धर्म की उपस्थिति का बोध कराता है।

कन्सुआ / कणसवा अभिलेख (738 ई.) - कोटा

➢ इस अभिलेख से मौर्य शासक धवल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
➢ राजस्थान में मौर्यों के बारे में जानकारी देने वाला अंतिम अभिलेख है।

◪ **'घोसुण्डी' अभिलेख भाषा में लिखे गये थे–**

JEN (Electric) Degree – 18.05.2022

(a) राजस्थानी (b) संस्कृत
(c) पाली (d) प्राकृत

उत्तर (b) व्याख्या:–

➢ इस लेख की **भाषा संस्कृत** है और **लिपि ब्राह्मी** है।
➢ इस शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर ने पढा था।

◪ **कौन-सा अभिलेख महाराणा कुम्भा के लेखन पर प्रकाश डालता है?**

RAS–2009, वनरक्षक– 12.12.2022

(a) कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)
(b) कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)
(c) जगन्नाथ राय शिलालेख (1652 ई.)
(d) राज प्रशस्ति (1676 ई.)

उत्तर (b) व्याख्या:–

कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)

➢ यह प्रशस्ति कई शिलाओं पर खुदी हुई थी और चित्तौड़ दुर्ग में संभवत: कीर्ति स्तम्भ की ताकों पर लगाई गई थी। किन्तु अब केवल दो शिलाएँ ही उपलब्ध है, अन्य शिलाएँ बिजली गिरने से नष्ट हो गई हैं।
➢ वर्तमान में 1 से 28 और 162-187 तक श्लोक ही उपलब्ध है।

- कुम्भा द्वारा मालवा और गुजरात की सम्मलित सेनाओं को हराना प्रशस्ति के 179वें श्लोक में वर्णित है।
- कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति के रचयिता कवि अत्रि व महेश थे।
- इस प्रशस्ति में हम्मीर को विषमघाटी पंचानन (विकट युद्धों में शेर के समान) कहा गया है।
- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में मेवाड़ के गुहिल शासक बप्पा रावल से लेकर कुम्भा तक की वंशावली वर्णित है।
- कुम्भा को इस प्रशस्ति में "दानगुरू", "राजगुरू" और "शैलगुरू" आदि विरूदो से संबोधित किया गया है।
- कुम्भा द्वारा रचित ग्रंथों चण्डीशतक, गीतगोविन्द की टीका, संगीतराज और कई नाटकों का उल्लेख किया गया है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652 ई.)

- **भाषा -** संस्कृत
- **लिपि -** देवनागरी
- **लेखक -** कृष्णभट्ट
- यह प्रशस्ति उदयपुर के जगन्नाथराय मंदिर (जगदीश मंदिर) के सभामंडप में दोनों तरफ श्याम पत्थर पर उत्कीर्ण है।
- यह शिलालेख मेवाड़ के इतिहास के लिए उपयोगी है। इसमें बप्पा रावल से राणा जगतसिंह प्रथम तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति के अनुसार हल्दीघाटी के युद्ध में (1576 ई.) महाराणा प्रताप की जीत हुई थी।
- इस प्रशस्ति के अनुसार महाराणा जगतसिंह ने सूत्रधार भाणा व मुकुन्द की देख-रेख में उदयपुर में पंचायतन शैली में जगन्नाथराय (जगदीश) मंदिर का निर्माण (1651 ई.) करवाया था।

निम्न में से किस प्रशस्ति के रचयिता अत्रि और महेश थे?
वनरक्षक–11.12.2022(S–I)

(a) बिजौलिया अभिलेख (b) रणकपुर प्रशस्ति
(c) कुम्भलगढ़ प्रशस्ति (d) कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति

उत्तर (d) व्याख्या:–

कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.) -

- कीर्ति स्तंभ की प्रशस्ति के रचयिता अत्रि और महेश थे।
- इस प्रशस्ति से कुंभा के लेखन कार्यों, उपाधियों व युद्ध अभियानों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- इसके अनुसार कुंभा वीणा बजाने में निपुण था। उसकी वीणा का नाम 'वल्लकी' था।

कुंभलगढ प्रशस्ति (1460 ई.) -

- इस शिलालेख का रचयिता महेश भट्ट था।
- इस प्रशस्ति में कुंभा को ''धर्म एवं पवित्रता का अवतार तथा कर्ण एवं भोज के समान दानी'' बताया गया है।
- इसमें महाराणा कुंभा को 'विप्र' (ब्राह्मणवंशीय) कहा गया है।

कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के रचयिता है?
जेल प्रहरी-2017

(a) राणा सांगा (b) कुम्भा
(c) कवि महेश (d) देपाक

उत्तर (c) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'रसिया की छत्री' अभिलेख का नाम उत्कीर्ण है-
प्रवक्ता (तकनीकी शिक्षा विभाग) - 12.03.2021

(a) नरवर्मा गुहिल (b) जोगेश्वर चौबीसा
(c) महाराणा राजसिंह (d) सामन्त सिंह

उत्तर (a) व्याख्या:–

रसिया की छत्री का शिलालेख (1274) –

- चित्तौड़गढ़ जिले के राजमहल के पीछे उत्कीर्ण इस लेख से मेवाड़ के गुहिलवंशीय शासकों (बप्पा से नरवर्मा तक) की जानकारी प्राप्त होती है।
- इसकी रचना प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा ने की। इस लेख में मेवाड़ के 13वीं शताब्दी के जन-जीवन एवं प्राकृतिक स्थिति की जानकारी (नागदा एवं देलवाड़ा) मिलती है।

निम्नलिखित में से एकलिंग शिलालेख (1488 ई.) का लेखक है?
कनिष्ठ अनुदेशक (इलेक्ट्रीशियन- 24.03.2019)

(a) महेश्वर (b) जगन्नाथ राय
(c) राणा कुंभा (d) जगत सिंह

उत्तर (a) व्याख्या:–

- एकलिंग प्रशस्ति (गिरवा तहसील, उदयपुर) का रचयिता महेश भट्ट (महेश्वर) था।
- इसमें बापा रावल का संन्यास लेना एवं मेवाड़ के गुहिलों का वर्णन है।

आबू के अभिलेख के लेखक कौन है?
राजस्थान पुलिस कॉ. 14.7.2018(S–II)

(a) शुभचन्द्र
(b) पार्श्वचन्द्र
(c) कर्मचन्द
(d) दीपचन्द

उत्तर (a) व्याख्या:–

आबू का अभिलेख (1230 ई.) –

- यह अभिलेख आबू के नेमिनाथ मंदिर में लगा हुआ है।
- शुभचंद्र / सोमेश्वर (सुरथोत्सव के लेखक) ने इसकी रचना की थी।
- इस अभिलेख से परमार वंश तथा वस्तुपाल व तेजपाल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

02 प्राचीन सभ्यताएँ एवं पुरातात्विक स्थल

कालीबंगा उत्तरी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में ..... नदी के किनारे स्थित है।

Lab Assistant (Geo.) – 30.06.2022

(a) घग्घर (सरस्वती) (b) लूणी
(c) साबरमती (d) बनास

उत्तर (a) व्याख्या:–

कालीबंगा सभ्यता

- कालीबंगा सभ्यता घग्घर/दृषद्वती/सरस्वती नदी के बाएं किनारे हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइजि पियो (एल.पी.) टेस्सीटोरी द्वारा सर्वप्रथम इस सभ्यता के बारे में जानकारी प्रदान की गई।
- सर्वप्रथम अमलानंद घोष ने 1952 ई. में इस सभ्यता की खोज की।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ **काले रंग की चूड़िया** होता है। यहां उत्खनन में बड़ी संख्या में काले रंग की चूड़िया प्राप्त हुई है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1961 से 1969 ई. के मध्य पांच स्तरों पर इस सभ्यता का उत्खनन किया गया था।

कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में किस नदी के बाएं या दक्षिणी तट पर स्थित है?

राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-14.09.2025

(a) सरस्वती नदी (b) घग्गर (घग्गर-हकरा) नदी
(c) सतलुज नदी (d) दृषद्वती नदी

उत्तर (b) व्याख्या:–

- कालीबंगा प्राचीन सरस्वती नदी (वर्तमान में घग्घर) के बाएँ या दक्षिणी तट पर हनुमानगढ़ जिले में स्थित नगरीय सभ्यता थी।
- सरस्वती नदी पौराणिक हिंदु ग्रंथों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है।
- इस नदी का वेदों में 80 बार उल्लेख हुआ है। सरस्वती नदी का उल्लेख **ऋग्वेद के दसवें मण्डल** में मिलता है।
- सरस्वती नदी का वर्तमान स्वरूप घग्घर नदी है।
- घग्घर नदी को **दृषद्वती नदी, सोता नदी, मृत नदी, हकरा व राजस्थान का शोक** भी कहा जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण स्थल कालीबंगा, किस प्राचीन नदियों की घाटी में स्थित था?

राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-13.09.2025

(a) गंगा और नर्मदा (b) सरस्वती और दृषद्वती
(c) चंबल और यमुना (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखे।

सिन्धु घाटी से अलग एक हड़प्पा उत्खननकर्ताओं द्वारा निम्नलिखित में से किसका वर्णन किया गया है?

राजस्थान पुलिस–13.5.2022

(a) कुरदा (b) वैनारा
(c) कालीबंगा (d) बिहारीपुरा

उत्तर (c) व्याख्या:–

कालीबंगा -

- यह एक प्रसिद्ध सैंधव स्थल (सिन्धु-सरस्वती सभ्यता) है।
- कालीबंगा सभ्यता को गरीब सभ्यता, नगरीय सभ्यता, मातृसत्तात्मक सभ्यता, कांस्ययुगीन सभ्यता, हड़प्पाकालीन सभ्यता व साक्षर सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार कालीबंगा सभ्यता का समय **2350** ई.पू. से **1750** ई.पू. माना जाता है।
- यह सभ्यता लगभग 6000 वर्ष प्राचीन मानी जाती है।
- **वर्ष 1961** में कालीबंगा पर भारत सरकार द्वारा **90 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु वर्ष **1985–86 में एक संग्रहालय की स्थापना** की गई।

कालीबंगा सभ्यता को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय दिया जा सकता है?

III Grade (SST) – 26.02.2023

(a) बी. बी. लाल (b) बी. के. थापर
(c) एम. डी. खरे (d) अमलानन्द घोष

उत्तर (d) व्याख्या:–

- कालीबंगा सभ्यता की खोज **1952 ई.** में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के निदेशक **'अमलानंद घोष'** द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल के रूप में की गई थी।
- कालीबंगा देश का **तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल** है। **नोट–** देश के दो बड़े पुरातात्विक स्थलों में राखीगढ़ी (हरियाणा) एवं धौलावीरा (गुजरात) है।

➢ कालीबंगा को **'दीन-हीन बस्ती'** भी कहा जाता है।
➢ कालीबंगा में **मातृसत्तात्मक परिवार** व्यवस्था विद्यमान थी।
➢ संस्कृत साहित्य में इसे बहुधान्यदायक क्षेत्र कहा गया है।

उस पुरातत्वविद् का नाम बताइये जिसने प्रथम बार पूर्व हड़प्पा संस्कृति और नगरीय हड़प्पा संस्कृति की समानताओं को रेखांकित किया।

2nd Grade भर्ती SST 28.12.2024

(a) डी.एच. गार्डन (b) जॉन मार्शल
(c) मॉर्टिमर व्हीलर (d) अमलानंद घोष

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

वर्ष 1961 से 1969 की अवधि के दौरान निम्न में कौन पुरातत्त्ववेत्ता कालीबंगा के उत्खनन से संबंधित नहीं हैं?

II Grade GK-22.12.2022

(a) आर. सी. अग्रवाल (b) बी. बी. लाल
(c) बी. के. थापर (d) एम. डी. खरे

उत्तर (a) व्याख्या:-
कालीबंगा सभ्यता के उत्खननकर्ता (1961-69 ई.) -
➢ 1. बी.बी. लाल 2. बी.के. थापर
3. अमलानंद घोष 4. एम.डी. खरे
5. के.एम. श्रीवास्तव 6. एस.पी. श्रीवास्तव
7. एस.पी. जैन 8. जे.पी. जोशी

1960 में बी. बी. लाल और बी. के. थापर के निर्देशन में किस पुरातात्विक स्थल की खुदाई की गई थी?

लाइब्रेरियन GK - 27.07.2025

(a) धौलावीरा (b) हड़प्पा
(c) लोथल (d) कालीबंगन

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

कालीबंगा पुरातत्त्व स्थल की खुदाई में बी.बी. लाल के सहयोगी नहीं रहे?

II Grade (San.) -12.02.2023 (S-I)

(a) एम.डी. खरे (b) के. एम. श्रीवास्तव
(c) एस.पी. जैन (d) ए. त्रिपाठी

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

किस एक अभिकरण ने कालीबंगा के उत्खनन कार्य का उत्तरदायित्व सँभाला?

CET- 04.02.2023 (S-I)

(a) राजस्थान पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर
(b) भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
(c) डेक्कन कॉलेज, पुणे
(d) मेलबोर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ कालीबंगा सभ्यता के उत्खनन का कार्य भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली द्वारा 1961 से 1969 ई. के मध्य पांच स्तरों पर किया गया।

निम्नलिखित में से किस पुरातत्त्व स्थल पर घरों में अण्डाकार कुएं मिले हैं?

II Grade GK-24.12.2022

(a) आहड़
(b) ओझियाना
(c) गिलूण्ड
(d) कालीबंगा

उत्तर (d) व्याख्या:-
कालीबंगा सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य-
➢ अण्डाकार कुएं, सात अग्नि वैदिकाएं, बलिप्रथा के साक्ष्य, अण्डाकार कब्र, युग्मित शवाधान, छ: छेद वाली खोपड़ी (शल्य चिकित्सा का ज्ञान), मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर, मृणपट्टिका पर सींगयुक्त देवता की प्रतिमा का अंकन, सिक्कों पर व्याघ्र व महिला कुमारी देवी का चित्र, कांसे का दर्पण, तांबे की चुड़िया व भूकम्प के साक्ष्य।

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'कालीबंगा सभ्यता' के विषय में सही नहीं है?

CET: 08.01.2023 (S-I)

(a) कालीबंगा से ऊँट की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।
(b) कालीबंगा से प्रथम अंकित किए गए भूकम्प के साक्ष्य मिले हैं।
(c) कालीबंगा की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी।
(d) प्राक्हड़प्पा अग्निवेदियों के साक्ष्य मिले हैं।

उत्तर (d) व्याख्या:-
कालीबंगा सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य-
➢ कालीबंगा सभ्यता के बारे में सर्वप्रथम जानकारी इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने दी थी।
➢ यहां से भूकंप के साक्ष्य, ऊंट की हड्डिया, हाथी दांत का कंघा व लकड़ी की नालियां प्राप्त हुई है।
➢ यहां चाक पर निर्मित हल्के-पतले लाल रंग के मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन पर काली व सफेद रंग की धारियां बनी हुई है।
➢ इस सभ्यता के लोग माल ढोने के लिए संभवत: बेलगाड़ी का प्रयोग करते थे।
➢ यहां से शतरंज व चौसर की गोटियां प्राप्त हुई है।

03 जनपद एवं प्राचीन नाम

मत्स्य का सर्वप्रथम उल्लेख आता है-
Agriculture Officer: 29.01.2013
JEN (Electric) Degree - 18.05.2022

(a) ऋग्वेद (b) रामायण
(c) महाभारत (d) शतपथ ब्राह्मण

उत्तर (a) व्याख्या:-
- मत्स्य जाति व जनपद का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में आता है।
- ऋग्वेद के अतिरिक्त मत्स्य महाजनपद का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय, जैन ग्रंथ भगवती सूत्र, महाभारत, मनु संहिता, कौषितकी उपनिषद् व शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है।

निम्नलिखित में से किस ग्रंथ/किन ग्रंथों में 'मत्स्य जनपद' के नाम का उल्लेख मिलता है?
[Asstt. Fisheries Develop. Off. Exam – 29.07.2025]

A. अंगुत्तर निकाय, B. महाभारत, C. मनु संहिता
सही कूट का चयन कीजिए:

(a) केवल A (b) केवल B
(c) A और B (d) A, B और C

उत्तर (d) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से कौनसा एक महाजनपद राजस्थान में स्थित था?
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-06.11.2020 (II)]

(a) अंग (b) मत्स्य
(c) अवंति (d) चेदि

उत्तर (b) व्याख्या:-
- बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय व जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में उल्लेखित 16 महाजनपदों में से एक मत्स्य महाजनपद राजस्थान में स्थित था।
- मत्स्य महाजनपद का विस्तार सरस्वती नदी से चम्बल नदी के मध्य था।
- इस महाजनपद का विस्तार वर्तमान राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, डीग व खैरथल-तिजारा जिलों में था।

मत्स्य जनपद की राजधानी थी-
[राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-2020, 2022]

(a) चम्पा (b) बैराठ
(c) कुशीनारा (d) गोकुलपुरा

उत्तर (b) व्याख्या:-
- मत्स्य महाजनपद की राजधानी बैराठ (विराटनगर) थी।
- वर्तमान में यह कोटपूतली-बहरोड जिले में स्थित है।
- महाभारतकाल में मत्स्य महाजनपद का शासक विराट था जिसने जयपुर से 85 किमी. दूर विराटनगर बसाकर उसे मत्स्य जनपद की राजधानी बनाया।
- पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास विराटनगर में व्यतीत किया था।
- महाभारत के युद्ध में यहां का शासक राजा विराट पांडवों की तरफ से लड़ा था।
- विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ था। इन्हीं का पुत्र परीक्षित कालान्तर में पांडवों के राज्य का उत्तराधिकारी बना था।
- गोपीनाथ शर्मा के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद मत्स्य जनपद शक्तिशाली हो गया था।

प्राचीन भारत में विराटनगर किस जनपद की राजधानी थी-
JEN (यांत्रिकी/विद्युत) डिग्री -26.12.2020

(a) मत्स्य जनपद (b) राजन्य जनपद
(c) शाल्व जनपद (d) शिवी जनपद

उत्तर (a) व्याख्या:-
- प्राचीन भारत में विराटनगर मत्स्य महाजनपद की राजधानी थी।
- मत्स्य जनपद का शाल्व जनपद व चेदि जनपद से प्राय: संघर्ष होता रहता था।
- मगध महाजनपद ने मत्स्य जनपद को जीतकर मगध साम्राज्य में शामिल कर लिया था।

शूरसेन जनपद की राजधानी थी-
[REET-18.02.2018]

(a) मथुरा (b) वृन्दावन
(c) इन्द्रप्रस्थ (d) कुरुक्षेत्र

उत्तर (a) व्याख्या:-
- शूरसेन महाजनपद की राजधानी मथुरा थी।
- इस जनपद का विस्तार राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर, करौली, डीग व अलवर जिले के पूर्वी भाग में था।
- महाभारत के अनुसार यहां पर यदुवंश (यादव) का शासन था।
- भगवान श्रीकृष्ण का संबंध इसी जनपद से था।

शूरसेन जनपद में सम्मिलित भू-भाग था-
[JEN (Mech.) Degree (TSP) - 16.10.2016]
(a) भरतपुर, धौलपुर, करौली (b) उदयपुर, चित्तौड़गढ़
(c) जोधपुर, बीकानेर (d) सिरोही, जालौर

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

प्राचीन राजस्थान में मालवों की शक्ति का केन्द्र किसके आसपास केन्द्रित था?
[राज.पु. कॉन्टे-14.7.18 (II)]
(a) डूंगरपुर (b) जयपुर
(c) बीकानेर (d) कोटा

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ प्राचीन राजस्थान में मालवों की शक्ति का केन्द्र टोंक व जयपुर क्षेत्र था।
➢ मालव जनपद की राजधानी कर्कोट नगर थी।
➢ महाभारत में उल्लेखित मालवों की राजधानी कार्कोट नगर का समीकरण नगर (टोंक) से किया जाता है।
➢ यह एक गणतांत्रिक जनजाति थी जिसके सर्वाधिक सिक्के प्राप्त हुए है।
➢ ए.सी.एल. कार्लाइल को 1871 ई. में नगर (टोंक) से मालव जनजाति के लगभग 6000 सिक्के प्राप्त हुए है।
➢ मालवों ने पश्चिमी शकों के विरूद्ध विजयोपरांत एकाषष्ठी रात्र यज्ञ का आयोजन किया था।

राजस्थान में निम्न में से किस गणतांत्रिक जनजाति के सर्वाधिक सिक्के प्राप्त हुए हैं?
[Assistant Agri. Officer -28.05.2022]
(a) यौधेय (b) मालव
(c) अर्जनायन (d) राजन्य

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से किसके द्वारा पश्चिमी शकों के विरुद्ध विजयोपरांत 'एकाषष्ठी रात्र यज्ञ' का आयोजन किया गया?
[Deputy Jailor Exam – 13.07.2025]
(a) मालव (b) यौधेय
(c) शिबि (d) मत्स्य

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

प्राचीन नाम के असुमेलित जोड़े को छाँटिए-
[LDC-19.08.2018]
(a) गंगानगर-यौधेय (b) भरतपुर-विराट
(c) जालौर-स्वर्णगिरी (d) उदयपुर-शिवि

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ **यौधेय** – श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़
➢ **विराटनगर** – बैराठ (कोटपूतली-बहरोड)
➢ **सुवर्णगिरी** – जालौर
➢ **स्वर्णगिरी** – जैसलमेर
➢ **शिवि** – उदयपुर-चित्तौड़गढ

शिवि जनपद का उल्लेख का सर्वप्रथम स्रोत है-
[Agriculture Officer: 29.01.2013]
(a) सिक्के (b) शिलालेख
(c) संस्कृति साहित्य (d) यूनानी साहित्य

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ शिवि जनपद के उल्लेख का सर्वप्रथम स्त्रोत सिक्के है।
➢ सिक्कों के अतिरिक्त शिवि जनपद का उल्लेख पाणिनी के अष्टाध्यायी, पतंजलि के महाभाष्य तथा वेद व्यास कृत महाभारत में भी मिलता है।
➢ बड़ली शिलालेख (443 ई.पू.) से भी शिवि जनपद के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

चित्तौड़ के आस-पास के क्षेत्र को ..... के जनपद के रूप में जाना जाता था।
[EO & RO-14.05.2023 (S-1)]
(a) बैराठ (b) अबति
(c) शिवि (d) मालव

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ चित्तौड व उदयपुर के आस-पास के क्षेत्र को शिवि जनपद के रूप में जाना जाता था।
➢ शिवि जनपद की राजधानी माध्यमिका / नगरी (चित्तौड़गढ) थी।
➢ यूनानी शासक मिनेण्डर ने 150 ई.पू. में माध्यमिका (नगरी) पर आक्रमण किया था।

उदयपुर का पुरातन नाम था।
[कनिष्ठ अनुदेशक-24.03.2019]
(a) जांगल देश (b) कुरूदेश
(c) शिवि (d) यौद्धेय

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ उदयपुर का पुरातन नाम शिवि था।
➢ उदयपुर को मेवाड़, मेदपाट व प्राग्वाट के नाम से भी जाना जाता था।

निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन स्थल शिवि जनपद से सबंधित है?
[Asst. Statistical Officer-08.07.2022)
(a) नगरी (b) नगर
(c) रैड़ (d) बैराठ

04 राजपूतों की उत्पत्ति

निम्नलिखित में से कौन नागर ब्राह्मणों से राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला पहला व्यक्ति था?

[पटवार परीक्षा द्वितीय पारी-17.08.2025]

(a) कर्नल जेम्स टॉड (b) डॉ. दशरथ शर्मा
(c) वी.ए. स्मिथ (d) डॉ. डी.आर. भंडारकर

उत्तर (d) व्याख्या:-

राजपूतों की उत्पति से संबंधित सिद्धान्त		
क्र. सं.	**सिद्धांत / मत**	**प्रवर्तक / समर्थक**
1.	अग्निकुंड से उत्पन्न	चंद्रबरदाई मुहणोत नैणसी सूर्यमल्ल मीसण
2.	ब्राह्मणों से उत्पन्न	डॉ. डी.आर. भंडारकर डॉ. गोपीनाथ शर्मा
3.	वैदिक आर्यों की संतान	डॉ. जी.एच. ओझा सी.वी. वैद्य

नागर ब्राह्मणों से राजपूतों की उत्पत्ति का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया?

[CET 12th Level 24.10.2024]

(a) विंसेट स्मिथ (b) गौरी शंकर
(c) जेम्स टॉड (d) डॉ. डी.आर. भंडारकर

उत्तर (d) व्याख्या:-

➢ सर्वप्रथम डॉ. भंडारकर ने नागर ब्राह्मणों से राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

राजपूत वैदिक आर्यों की सन्तान है- इस मत के प्रतिपादक थे:

[RPSC III Grade Teacher-2009]

(a) डॉ. डी.आर. भण्डारकर (b) कर्नल टॉड
(c) गौरी शंकर हीराचन्द ओझा (d) विलियम क्रुक

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तथा सी.वी. वैद्य राजपूतों को भारतीय आर्यों के क्षत्रिय वर्ण (राजन्य वर्ग) की सन्तान मानते हैं।

➢ इनके कथनानुसार राजपूत प्राचीन क्षत्रियों की तरह अश्व तथा अस्त्र की पूजा करते हैं। प्राचीन आर्यों की भाँति यज्ञ और बलि में भी उनका विश्वास रहा है। उनके सुडौल शारीरिक गठन, लम्बी नाक और लम्बे सिर से भी यह प्रमाणित होता है कि वे आर्यों की सन्तान हैं।

'ब्रोचगुर्जर' नामक ताम्रपत्र के आधार पर राजपूतों को यू-ची जाति का वंशज मानते हुए इनका सम्बन्ध कुषाण जाति से किसने जोड़ा है?

[पटवारी Pre-2016]

(a) जार्ज थॉमस (b) डॉ. भण्डारकर
(c) कनिंघम (d) डॉ. कानूनगो

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ अलेक्जेण्डर कनिंघम ने ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र (978 ई.) के आधार पर राजपूतों को यू-ची जाति का वंशज मानते हुए इनका संबंध कुषाण जाति से जोड़ा है।

राजपूतों को हूणों की सन्तान बताया हैं-
महिला पर्यवेक्षक परीक्षा (Non-TSP) - 29.11.2015

(a) कर्नल जेम्स टॉड (b) वी.ए. स्मिथ
(c) डॉ. भण्डारकर (d) डॉ. दशरथ शर्मा

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ वी.ए. स्मिथ ने राजपूतों को हूणों (विदेशी जाति) की संतान बताया है।

'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति हुई?

[जेल प्रहरी परीक्षा - 2017]

(a) अग्निकुण्ड (b) आकाश
(c) सूर्य (d) चन्द्रमा से

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ चंद्रबरदाई के ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार ऋषि वशिष्ठ के आबू पर्वत यज्ञ के अग्निकुंड / हवनकुंड से प्रतिहार, परमार, चालुक्य व चौहान नामक चार राजपूत जातियां उत्पन्न हुई थी।

➢ मुहणोत नैणसी व सूर्यमल्ल मीसण ने इस सिद्धांत का समर्थन किया है।

निम्नलिखित में से किस विद्वान के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से हुई थी?

[पशुधन सहायक परीक्षा - 21.10.2018]

(a) श्री गौरीशंकर ओझा (b) डॉ. गोपीनाथ शर्मा
(c) कवि चन्दरबरदाई (d) डॉ. दशरथ शर्मा

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

कौनसा रासो राजपूतों की उत्पत्ति को 'अग्निकुण्ड' से सम्बन्धित करता है?
[JEN (Civil) Diploma-06.12.2020]
(a) पृथ्वीराज रासो (b) हम्मीर रासो
(c) बीसलदेव रासो (d) खुमाण रासो

उत्तर (a) व्याख्या:–
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्न में से किस राजवंश ने अपना उद्गम मिथकीय 'अग्निकुण्ड' से नहीं जोड़ा है?
[Head Master-2011]
(a) चौहान (b) सोलंकी
(c) चंदेल (d) परमार

उत्तर (c) व्याख्या:–
➢ प्रतिहार, परमार, चालुक्य (सौलंकी) व चाहमान (चौहान) राजवंशों ने अपना उदगम मिथकीय अग्निकुंड से जोडा है।

निम्न में से कौन-से वंश की उत्पत्ति अग्निकुंड से नहीं हुई?
[उद्योग प्रसार अधिकारी-22.08.2018]
(a) सिसोदिया (b) चौहान
(c) चालुक्य (d) परमार

उत्तर (a) व्याख्या:–
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भारतीय इतिहास में राजपूत वंशों का प्रभुत्व ..... तक की अवधि के दौरान था।
[पु. कॉन्स्टेबल-16.5.2022 (II)]
(a) आठवीं से बारहवीं शताब्दी ई.
(b) छठी से सातवीं शताब्दी ई.
(c) पाँचवीं से नौवीं शताब्दी ई.
(d) तीसरी से पाँचवीं शताब्दी ई.

उत्तर (a) व्याख्या:–
➢ प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. स्मिथ ने सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक के समय को राजपूत काल कहा है।
➢ चाणक्य के अर्थशास्त्र, कालिदास के नाटकों व बाणभट्ट के हर्षचरित तथा कादम्बरी नामक ग्रंथों में राजपूत शब्द का उल्लेख मिलता है।
➢ चीनी यात्री ह्वेनसांग ने राजाओं को कहीं क्षत्रिय और कहीं राजपूत लिखा है।

निम्न में से किस इतिहासकार ने राजपूतों को शक अथवा सीथियन जाति के वंशज माना है?
[उद्योग प्रसार अधि.- 2018] [खाद्य सुरक्षा अधि.- 2019]
(a) सी.एम. वैद्य (b) जेम्स टॉड
(c) गोपीनाथ शर्मा (d) चन्दबरदाई

उत्तर (b) व्याख्या:–
➢ जेम्स टॉड ने राजपूतों को शक अथवा सीथियन नामक विदेशी जाति का वंशज माना है।

मण्डौर के प्रतिहार माने जाते हैं–
II Gra. (Maths)2011
(a) क्षत्रिय (b) वैश्य
(c) शूद्र (d) ब्राह्मण

उत्तर (a) व्याख्या:–
– मण्डौर के प्रतिहार क्षत्रिय माने जाते हैं।

प्रतिहारों की उत्पत्ति से संबंधित मत

क्र. सं.	सिद्धांत / मत	प्रवर्तक / समर्थक
1.	अग्निवंशी	चंद्रबरदाई
2.	सूर्यवंशी	जी.एच.ओझा
3.	रघुवंशी	ग्वालियर प्रशस्ति
4.	ब्राह्मणवंशी	घटियाला शिलालेख
5.	शक या सीथियन	जेम्स टॉड व क्रुक
6.	हूण	डॉ. स्मिथ
7.	कुषाण (यू-ची)	डॉ. कनिंघम
8.	ईरानी	केनेडी
9.	खजर	जैक्सन व भण्डारकर

निम्न में से किस ग्रन्थ में चौहानों को 'सूर्यवंशीय' नहीं माना गया है–
संग्रहालयाध्यक्ष – 19.06.2024
(a) हम्मीर रासो (b) गोत्रोच्चार
(c) हम्मीर महाकाव्य (d) पृथ्वीराज विजय

उत्तर (b) व्याख्या:-

चौहानों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न सिद्धांत

क्र.स.	सिद्धांत/मत	प्रवर्तक/समर्थक
1.	अग्निवंशी	पृथ्वीराज रासो, मुहणोत नेणसी व सूर्यमल्ल मीसण
2.	सूर्यवंशी	हम्मीर महाकाव्य, पृथ्वीराज विजय, सुर्जन चरित्र, हम्मीर रासो, चौहान प्रशस्ति, बेदला शिलालेख व जी.एच.ओझा
3.	चंद्रवंशी	हांसी अभिलेख (हरियाणा) व अचलेश्वर मंदिर का अभिलेख (सिरोही)
4.	इंद्रवंशी	रायपाल का सेवाड़ी (पाली) अभिलेख
5.	ब्राह्मणवंशी	बिजोलिया शिलालेख (भीलवाड़ा), चंद्रावती शिलालेख (सिरोही), कायम खां रासो (न्यामत खां), दशरथ शर्मा, डी.आर. भण्डारकर व गोपीनाथ शर्मा
6.	विदेशी	जेम्स टॉड, विलियम क्रुक व डॉ. स्मिथ

05 गुर्जर-प्रतिहार वंश

750-1000 ईस्वी के दौरान राजस्थान और अधिकांश उत्तरी भारत पर निम्नलिखित में से किसने शासन किया था?

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल–15.05.022 (I)

(a) चौहान (b) मुगल शासक
(c) मराठा (d) प्रतिहार

उत्तर:– (d) व्याख्या:–

- 750-1000 ईस्वी के दौरान, राजस्थान और अधिकांश उत्तरी भारत पर **प्रतिहार वंश** ने शासन किया था।
- आठवीं से दसवीं शताब्दी तक राजस्थान में प्रतिहार राजवंश का वर्चस्व रहा था।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में स्थित **गुर्जरत्रा क्षेत्र** में प्रतिहार वंश का शासन रहा था।
- प्रतिहार शब्द का शाब्दिक अर्थ **'रक्षक' व 'द्वारपाल'** होता है।
- प्रतिहार स्वयं को **लक्ष्मण (सौमित्र) के वंशज तथा रघुवंशी क्षत्रिय** मानते हैं।
- **डॉ. आर सी. मजूमदार** के अनुसार गुर्जर–प्रतिहारों ने छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- **चंदेल वंश के शिलालेख** में गुर्जर–प्रतिहार शब्द का उल्लेख मिलता है।
- अरब यात्रियों ने प्रतिहारों को **'जुर्ज'** कहा है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इन्हें **'कू-चे-लो'** कहा है।
- घटियाला शिलालेख (861 ई.) व बाउक प्रशस्ति (837 ई.) में प्रतिहारों को 'ब्राह्मण' कहा गया है।
- मिहिरभोज के शासनकाल में रचित **'ग्वालियर प्रशस्ति'** में प्रतिहारों को इक्ष्वाकु कुल के रघुवंशी क्षत्रिय तथा लक्ष्मण का वंशज कहा गया है।
- बुचकला शिलालेख (815 ई.) व राजौरगढ़ अभिलेख (960 ई.) से भी प्रतिहार वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

इतिहासकार आर. सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर–प्रतिहारों ने कितनी शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम किया?

II Grade (Sanskart) Exam. 2011

(a) दूसरी शताब्दी से चौथी शताब्दी
(b) तीसरी शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी
(c) छठी शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी
(d) बारहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी

उत्तर:– (c) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक राजस्थान में कि राजपूत वंश का वर्चस्व रहा?

पटवार परीक्षा - 2011

(a) चावंड वंश का (b) प्रतिहार वंश का
(c) भाटी वंश का (d) परमार वंश का

उत्तर:– (b) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्न में से किसने अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है?

प्राध्यापक एवं कोच परीक्षा- 27-06-2025

1. नीलगुण्ड **2. देवली**
3. रामनपुर **4. करहाड़**
(a) 1, 4 (b) 1, 3, 4
(c) 1, 2, 3 (d) 1, 2, 3, 4

उत्तर:– (d) व्याख्या:–

- नीलगुण्ड, देवली, रामनपुर व करहाड़ अभिलेखों तथा संजन, माने व भड़ौच ताम्रपत्रों में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
- बादामी के चालुक्य शासक **'पुलकेशिन–द्वितीय' के 'एहोल अभिलेख (634 ई.)'** में प्रतिहार शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ है।
- प्रतिहार शब्द का प्रथम साहित्यिक उल्लेख बाणभट्ट के ग्रंथ 'हर्षचरित्र' में हुआ है।
- यशस्तिलकचम्पू, कुवलयमाला व स्कंदपुराण नामक ग्रंथों में भी प्रतिहारों को गुर्जर शब्द से संबोधित किया गया है।

निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ में प्रतिहारों को गुर्जर शब्द से सम्बोधित नहीं किया गया है?

[Lecturer & Coach Exam – 03.07.2025]

(a) यशस्तिलकचम्पू
(b) कुवलयमाला
(c) वंश भास्कर
(d) स्कन्दपुराण

उत्तर:– (c) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से, सबसे प्राचीन शाखा है-
Head Master –11.10.2021
II Grade (Sans.) –12.02.2023 (S–II)

(a) ग्वालियर (b) मण्डौर
(c) उज्जैन (d) कन्नौज

उत्तर:– (b) व्याख्या:–

- **मुहणोत नैणसी** ने गुर्जर–प्रतिहारों की **'26 शाखाओं'** का वर्णन किया, जिनमें मंडोर, जालोर, राजोरगढ़, कन्नौज, उज्जैन और भड़ौंच के गुर्जर–प्रतिहार बड़े प्रसिद्ध रहे थे।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन 26 शाखाओं में से **मण्डौर शाखा सबसे प्राचीनतम** और महत्त्वपूर्ण थी।
- मंडोर के प्रतिहार क्षत्रिय माने जाते है।
- **हरिश्चन्द्र** को गुर्जर–प्रतिहार वंश का संस्थापक व **'आदिपुरुष'** माना जाता है।
- **बाणभट्ट** ने अपनी पुस्तक **'हर्षचरित'** में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- प्रतिहार राजवंश ने मंदिर निर्माण की **महामारू (गुर्जर-प्रतिहार) शैली को प्रोत्साहन प्रदान किया।**

मण्डौर के प्रतिहार माने जाते हैं–
II Gra. (Maths)2011

(a) क्षत्रिय (b) वैश्य
(c) शूद्र (d) ब्राह्मण

उत्तर:– (a) व्याख्या:–

प्रतिहारों की उत्पत्ति से संबंधित सिद्धांत	
सिद्धांत/मत	**प्रतिपादक/समर्थक**
अग्निवंशी	चंद्रबरदाई
सूर्यवंशी	जी.एच.ओझा
रघुवंशी	ग्वालियर प्रशस्ति
ब्राह्मणवंशी	घटियाला शिलालेख
शक या सीथियन	जेम्स टॉड व क्रुक
हूण	डॉ. स्मिथ
कूषाण (यू - ची)	डॉ. कनिंघम
ईरानी	केनेडी
खजर	जैक्सन व भण्डारकर

निम्न में से कौन–सा शासक 'रोहिलद्धि' नाम से जाना जाता था?
RPSC 1st Grade GK Paper (17.11.2024)

(a) रज्जिल (b) नागभट्ट-I
(c) मथनदेव (d) हरिश्चन्द्र

उत्तर:– (d) व्याख्या:–

- मण्डौर में प्रतिहार वंश के संस्थापक हरिश्चन्द्र को यौगिक क्रिया में निपुण होने के कारण **'रोहिलद्धि'** के नाम से भी जाना जाता है।
- हरिश्चन्द्र ने क्षत्रिय रानी भद्रा के साथ विवाह किया था।
- हरिश्चन्द्र व भद्रा के बीच भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल व दद्द (दह) नामक चार पुत्र उत्पन्न हुए थे।
- हरिश्चन्द्र के चारों पुत्रों ने **माण्डव्यपुर (मण्डोर)** को जीतकर इसके चारों ओर परकोटा बनवाया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।
- मण्डोर के प्रतिहार वंश की **वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से** शुरू होती है।

मण्डौर – प्रतिहार वंश के किस शासक से वंशावली प्रारम्भ होती है?
II Grade (S–II) –29.1.2023

(a) रज्जिल (b) हरिशचन्द्र
(c) भोगभटट (d) कंदक

उत्तर:– (a) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

रज्जिल किस प्रतिहार शाखा से सम्बन्धित था?
2nd Grade GK : 07.09.2025

(a) राजोगढ़ (b) उज्जैन
(c) जालौर (d) मण्डोर

उत्तर:- (d) व्याख्या-

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

प्रतिहार वंश की मण्डौर शाखा के किस शासक ने अपनी राजधानी मण्डौर से मेड़ता स्थानान्तरित की थी?
रसायनज्ञ परीक्षा–06.08.2024

(a) कक्कुक (b) रज्जिल
(c) नागभट्ट प्रथम (d) बॉउक

उत्तर:– (c) व्याख्या:–

नागभट्ट–प्रथम

- यह **नरभट्ट का पुत्र व रज्जिल का पौत्र** था जो एक प्रतापी शासक था।
- नागभट्ट–प्रथम को **नाहड़** के नाम से भी जाना जाता था।
- **घटियाला शिलालेख** के अनुसार नागभट्ट–प्रथम ने अपनी राजधानी मण्डोर से मेड़ता **(मेदांतक)** स्थानांतरित की थी।

कक्कुक

- यह प्रतिहार शासक कक्क का पुत्र व बाउक का भाई था।
- इसे 'प्रतिहार वंश का कर्ण' कहा जाता है।
- इसके समय **घटियाला शिलालेख (861 ई.) उत्कीर्ण** किया गया था।

06 चौहान वंश

निम्न में से किस ग्रन्थ में चौहानों को 'सूर्यवंशीय' नहीं माना गया है-

संग्रहालयाध्यक्ष - 19.06.2024

(a) हम्मीर रासो (b) गोत्रोच्चार
(c) हम्मीर महाकाव्य (d) पृथ्वीराज विजय

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ चौहानों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न सिद्धांत निम्नलिखित है-

क्र.स.	सिद्धांत/मत	प्रवर्तक/समर्थक
1.	अग्निवंशी	पृथ्वीराज रासो, मुहणोत नेणसी व सूर्यमल्ल मीसण
2.	सूर्यवंशी	हम्मीर महाकाव्य, पृथ्वीराज विजय, सुर्जन चरित्र, हम्मीर रासो, चौहान प्रशस्ति, बेदला शिलालेख व जी.एच.ओझा
3.	चंद्रवंशी	हांसी अभिलेख (हरियाणा) व अचलेश्वर मंदिर का अभिलेख (सिरोही)
4.	इंद्रवंशी	रायपाल का सेवाड़ी (पाली) अभिलेख
5.	ब्राह्मणवंशी	बिजोलिया शिलालेख (भीलवाड़ा), चंद्रावती शिलालेख (सिरोही), कायम खां रासो (न्यामत खां), दशरथ शर्मा, डी.आर. भण्डारकर व गोपीनाथ शर्मा
6.	विदेशी	जेम्स टॉड, विलियम क्रुक व डॉ. स्मिथ

चौहान राजवंश के संस्थापक शासक है?

जेल प्रहरी-2017

(a) पृथ्वीराज तृतीय (b) सामेश्वर
(c) अर्णोराज (d) वासुदेव

उत्तर (d) व्याख्या:-

वासुदेव चौहान -

➢ इसे चौहान वंश का संस्थापक/आदिपुरुष/मूलपुरुष माना जाता है।

➢ **बिजौलिया शिलालेख** (1170 ई.), राजशेखर के **प्रबंधकोष,** चंद्रशेखर के **'सुर्जन चरित्र' व डॉ. दशरथ शर्मा के ग्रंथ 'द अर्ली चौहान डायनेस्टी'** के अनुसार शाकम्भरी के चौहान वंश का **आदिपुरुष वासुदेव** था जिसने **551 ई.** के आस-पास सपादलक्ष में चौहान वंश की स्थापना की।

➢ बिजौलिया शिलालेख के अनुसार वासुदेव चौहान ने **सांभर झील का निर्माण** करवाया था।

➢ वासुदेव ने सर्वप्रथम **अहिच्छत्रपुर (नागौर)** को अपनी **राजधानी** बनाया।

चौहान शासकों की प्रारम्भिक राजधानी कौनसी थी?

III Grade (SST)-26.02.2023

(a) अजमेर (b) रणथम्भौर
(c) अहिच्छत्रपुर (d) दिल्ली

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ **चौहानों का मूल स्थान -** सपादलक्ष (सांभर झील के आस-पास का क्षेत्र)

➢ **प्रारंभिक राजधानी -** अहिच्छत्रपुर (नागौर)

➢ **चौहानों के कुल देवता -** हर्षनाथ (सीकर)

➢ **चौहानों की कुल देवी -** शाकंभरी माता (जयपुर)

➢ **जालौर व नाडोल के चौहानों की कुल देवी -** आशापुरा माता

➢ **सीकर के चौहानों की कुल देवी -** जीण माता (रैवासा)

अजमेर के चौहानों को ..... के नाम से भी जाना जाता है।

CET-11.2.2023 (S-1)

(a) जालोर के चौहान (b) रणथम्भौर के चौहान
(c) सपादलक्ष के चौहान (d) नाडोल के चौहान

उत्तर (c) व्याख्या:-

राजस्थान के चौहान

क्र.स.	क्षेत्र	वंश
1.	अजमेर	सपादलक्ष के चौहान
2.	जालौर	सोनगरा चौहान
3.	सिरोही	देवड़ा चौहान
4.	बूंदी	हाड़ा चौहान
5.	कोटा	हाड़ा चौहान

अजमेर नगर की स्थापना के पहले अजमेर के चौहानों की राजधानी कौन-सी थी?

II Grade (Sans.)-12.02 2023

(a) सांभर (b) नाड़ोल
(c) जालोर (d) रणथम्भोर

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ अजमेर नगर की स्थापना के पहले **अजमेर के चौहानों की राजधानी सांभर** थी।

राजस्थान के प्राचीन शहर शाकंभरी (अब सांभर) को सातवीं शताब्दी में ..... नामक चौहान राजा ने बसाया था।

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल- 15.05.2022

(a) वासुदेव (b) सामंतदेव
(c) सोमेश्वर (d) विग्रहराज

उत्तर (a) व्याख्या:-

वासुदेव चौहान -

➢ राजस्थान के प्राचीन शहर शाकंभरी (अब सांभर) को **वासुदेव नामक** चौहान शासक ने बसाया था।

विग्रहराज द्वितीय -

➢ 973 ई. के **हर्षनाथ अभिलेख** से विग्रहराज द्वितीय के शासन काल तथा विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

➢ हर्षनाथ लेख के अनुसार यह प्रारंभिक चौहानों का सबसे प्रतापी शासक था।

➢ विग्रहराज-द्वितीय ने चालुक्य शासक **मूलराज - प्रथम** को पराजित किया तथा भड़ौंच में अपनी कुलदेवी **आशापुरा माता के मंदिर** का निर्माण करवाया था।

चन्दनराज की रानी 'रुद्राणी' जो पुष्कर में प्रतिदिन एक हजार दीपक जलाकर भगवान महादेव की उपासना करती थी, किस वंश से सम्बन्धित थी?

ARO (Horticulture) 29.8.2022

(a) आबू के परमार
(b) गुजरात के सौलंकी
(c) जयपुर के कछवाहा
(d) शाकम्भरी के चौहान

उत्तर (d) व्याख्या:-

➢ शाकंभरी के चौहान शासक चन्दनराज की रानी 'रुद्राणी' (आत्मप्रभा) यौगिक क्रिया में निपुण थी।

➢ यह प्रतिदिन पुष्कर झील में एक हजार दीपक जलाकर भगवान महादेव की उपासना करती थी।

निम्नांकित चौहान शासकों में से हर्षनाथ मन्दिर का निर्माण किसने किया?

सांख्यिकी अधिकारी-25.02.2024

(a) चन्दनराज (b) अजयराज
(c) गूवक-प्रथम (d) वाक्पतिराज

उत्तर (c) व्याख्या:-

गूवक प्रथम -

➢ **'गूवक प्रथम'** ने हर्षनाथ मंदिर (सीकर) का निर्माण करवाया था, जो चौहानों के **'इष्टदेवता'** है।

➢ प्रारंभ में चौहान गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे परंतु गूवक प्रथम (नागभट्ट द्वितीय का सामंत था) ने गुर्जर प्रतिहारों की अधीनता से चौहानों को मुक्त करवाया अत: इसे चौहान वंश का पहला स्वतंत्र शासक माना जाता है।

➢ प्रतिहार शासक **नागभट्ट द्वितीय** ने गूवक को **'वीर'** की उपाधि प्रदान की थी।

वाक्पतिराज -

➢ वाक्पतिराज चौहानों का शक्तिशाली शासक था। इसने प्रतिहारों को परास्त किया।

➢ हर्षनाथ लेख (973 ई.) में इसे महाराज की उपाधि से संबोधित किया गया है।

➢ इसे **'188 युद्धों का विजेता'** माना जाता है।

➢ इसके पुत्र **लक्ष्मण सिंह (लाखनसी) ने** 960 ई. **में नाडोल में चौहान वंश** स्थापना की थी।

जयानक रचित 'पृथ्वीराज विजय' में एक शासक की प्रशंसा में लिखा है कि उसने पुष्कर पर आक्रमण करने वाले 700 चालुक्यों को मार गिराया। निम्न में से उस शासक का नाम बताइए-

ARO (Horticulture, Botany) 27.8.2022

(a) दुलर्भ राज-II (b) विग्रहराज-III
(c) पृथ्वीराज-I (d) पृथ्वीराज-II

उत्तर (c) व्याख्या:-

पृथ्वीराज प्रथम -

➢ जयानक रचित **'पृथ्वीराज विजय'** में चौहान शासक पृथ्वीराज प्रथम की प्रशंसा में लिखा है कि उसने पुष्कर पर आक्रमण करने वाले 700 चालुक्यों को मार गिराया था।

➢ इसने **बगुलीशाह नामक मुस्लिम आक्रान्ता** को पराजित किया था।

➢ पृथ्वीराज प्रथम के सामंत हट्टड़ मोहिल ने रैवासा (सीकर) में जीण माता के मंदिर का निर्माण करवाया था।

विग्रहराज तृतीय -

➢ इसने गजनी के **शासक शहाबुद्दीन** को पराजित किया था।

07 गुहिल वंश

निम्नांकित में से कौन-सा विद्वान गुहिलोतों की ब्राह्मण उत्पत्ति के सिद्धान्त के विरुद्ध है?

स्कूल व्याख्याता–2014

(a) जी.एच. ओझा
(b) दशरथ शर्मा
(c) जी.एन. शर्मा
(d) जे.एन. आसोपा

उत्तर (a) व्याख्या:–

गुहिल वंश की उत्पति से संबंधित सिद्धान्त

क्र.सं.	प्रवर्तक / प्रतिपादक	सिद्धांत / मत
1.	अबुल फजल	ईरान के बादशाह नौशेखा खाँ आदिल के वंशज
2.	जी.एच.ओझा	सूर्यवंशी
3.	जेम्स टॉड	वल्लभी (गुजरात) के शासक
4.	कविराज श्यामलदास	वल्लभी के शासक
5.	डॉ. डी.आर. भण्डारकर	ब्राह्मण
6.	डॉ. दशरथ शर्मा	ब्राह्मण
7.	डॉ. गोपीनाथ शर्मा	ब्राह्मण
8.	जे.एन. आसोपा	ब्राह्मण
9.	एकलिंग महात्म्य ग्रंथ	ब्राह्मण
10.	कुंभलगढ़ शिलालेख	ब्राह्मण
11.	मुहणौत नैणसी	ब्राह्मण

नैणसी की ख्यात में गुहिलों की कितनी शाखाओं का उल्लेख किया हैं?

महिला पर्यवेक्षक परीक्षा (TSP) 20.12.2015

(a) चौबीस
(b) छत्तीस
(c) बयालीस
(d) बीस

उत्तर (a) व्याख्या:-

- **मुहणौत नैणसी एवं कर्नल टॉड** ने गुहिलों की **24 शाखाओं** का वर्णन किया है। इनमें से कल्याणपुर, वागड़, चाटसू, धौड़ व काठियावाड के गुहिल अधिक प्रसिद्ध है।
- प्रसिद्ध शासक ईशान भट्ट गुहिलों की चाटसू शाखा से संबंधित था।
- कविराज श्यामलदास ने **गुहिलों की 36 शाखाएँ** बताई हैं।
- मेवाड़ के **राज्य चिह्न** पर अंकित है- **"जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहि राखे करतार"।**
- प्राचीनकाल में मेवाड़ को मेदपाट, प्राग्वाट व शिवि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेवाड़ का वर्तमान विस्तार उदयपुर, चित्तौडगढ, राजसमंद, भीलवाडा व प्रतापगढ जिलों में है।
- मेवाड़ के गुहिल शासकों को 'हिंदुआ सूरज' कहा जाता है।
- गुहिल वंश की कुलदेवी बाणमाता (चित्तौडगढ) व ईष्ट देवी अन्नपूर्णा माता (चित्तौडगढ) को माना जाता है।
- इनके कुलदेवता एकलिंगनाथ जी थे। मेवाड़ के गुहिल शासक स्वयं को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते थे।

ईशान भट्ट राजस्थान के गुहिलों की किस शाखा से सम्बन्ध रखते हैं?

Lecturer & Coach Exam – 27.06.2025

(a) चाटसू
(b) कल्याणपुर
(c) बागड़
(d) घोड़

उत्तर (a) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मेवाड़ राजवंश के संस्थापक कौन थे?

Raj. Police Cons. (Shift-II) Exam - 14.09.2025

(a) राणा सांगा
(b) बप्पा रावल
(c) राणा हामीर
(d) राणा प्रताप

उत्तर (b) व्याख्या:–

- मेवाड़ में गुहिल वंश का शासन था।
- गुहिल ने 566 ई. में मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना की थी।
- बप्पा रावल को मेवाड़ के गुहिल राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़, प्रतापगढ़ और उनके आसपास के क्षेत्र को मेवाड़ के नाम से जाना जाता था।

गुहिल वंश के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Raj. Police Cons. Exam - 13.09.2025

कथन-I: गुहिलों ने मेवाड़ पर शासन किया।

कथन-II: उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़, प्रतापगढ़ और उनके आसपास के क्षेत्र को मेवाड़ के नाम से जाना जाता था।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(a) कथन I और II दोनों सही हैं
(b) केवल कथन II सही है
(c) कथन I और II दोनों गलत हैं
(d) केवल कथन I सही है

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद और डूंगरपुर राजस्थान के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र का हिस्सा है?

निम्नलिखित विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

4th Grade (Shift-II) Exam - 20.09.2025

(a) ब्रज (b) मेवाड़
(c) मारवाड़ (d) हाड़ौती

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

734 ई. तक राजस्थान में मौर्य वंश का शासक कौन था, जो बाद में बप्पा रावल द्वारा मारा गया था?

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-02.07.2022]

(a) नागभट्ट (b) मानमोरी
(c) भिल्लुका (d) कक्कुका

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ **राजप्रशस्ति** के अनुसार बप्पा रावल ने **734 ई.** में अपने गुरू हारीत ऋषि के आशीर्वाद से मौर्य शासक **मानमोरी को पराजित** कर **चित्तौड़ पर अधिकार** किया और नागदा को अपनी राजधानी बनाया।

➢ बप्पा रावल को मेवाड़ में गुहिल वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।

➢ जी.एच. ओझा के अनुसार बप्पा का वास्तविक नाम कालभोज था। 'बप्पा' कालभोज की उपाधि थी। वीर विनोद के रचयिता कविराज श्यामलदास के अनुसार भी बापा कालभोज की उपाधि थी न कि नाम।

➢ जेम्स टॉड के अनुसार 'बप्पा' गुहिल शासक शिलादित्य की उपाधि थी।

➢ रणकपुर प्रशस्ति (1439 ई.) में बापा और कालभोज को दो अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है।

➢ कुंभलगढ शिलालेख (1460 ई.) में बापा को 'विप्र' कहा गया है।

➢ बप्पा रावल ने **हिन्दुआ सूरज, राजगुरु तथा चक्कवै** की उपाधियाँ धारण की थी।

➢ **इतिहासकार सी. वी वैद्य** ने बप्पा रावल की तुलना फ्रांसीसी सेनापति **'चार्ल्स मार्टेल'** से की है।

➢ बापा ने मेवाड़ में सर्वप्रथम सोने के सिक्के प्रारंभ किये। इसका एक सिक्का प्राप्त हुआ है जो 115 ग्रेन का माना जाता है।

➢ एकलिंग शिलालेख के अनुसार बापा ने राजकार्य से संन्यास लेकर शासन कार्य अपने पुत्र खुम्माण प्रथम को सौंप दिया।

➢ प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम के साथ मिलकर बापा ने मुस्लिम आक्रांताओं को भारत से बाहर खदेडने का कार्य किया।

➢ 753 ई. में नागदा (उदयपुर) में इसकी मृत्यु हुई तथा यहीं पर इसकी समाधि स्थित है। जिसे 'बप्पा रावल का मंदिर' कहा जाता है।

➢ बप्पा ने कैलासपुरी (उदयपुर) में एकलिंग जी व चित्तौड़ में कालिका माता के मंदिर का निर्माण करवाया।

निम्नलिखित में से कौन सा गुहिल शासक 'शिलादित्य' के नाम से जाना जाता है?

[Deputy Jailor Exam - 13.07.2025]

(a) कालभोज (b) अपराजित
(c) महेन्द्र-II (d) बप्पा रावल

उत्तर (d) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

चित्तौड़गढ़ के कालिका माता के मंदिर का निर्माण कब किया गया था?

[Lecturer & Coach Exam – 27.06.2025]

(a) आठवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में
(b) नवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में
(c) ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में
(d) दसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ बप्पा रावल ने आठवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में चित्तौड में कालिका माता के मंदिर का निर्माण करवाया।

➢ मूलत: यह एक सूर्यमंदिर था।

राठौड़ वंश

◪ **राठौड़ शब्द निम्न से बना है जो दक्षिण की एक जाति थी–**

Police Constable Exam–2007

(a) राष्ट्रकूट (b) मराठा
(c) राष्ट्रकुल (d) कोई भी नहीं

उत्तर (a) व्याख्या:–
- राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के **'राष्ट्रकूट'** शब्द से हुई है।
- मारवाड़ में राठौड़ वंश का शासन था। राठौड़ स्वयं को भगवान श्री राम के पुत्र कुश का वंशज मानते हैं।
- पृथ्वीराज रासो में राठौड़ों को 'कमधज' कहा गया है।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मारवाड़ क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत थी।

राठौड़ वंश की उत्पत्ति के संबंध में कई मत प्रचलित है जो निम्न प्रकार से है–
1. **डॉ. जी.एच. ओझा** ने राठौड़ों को दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट व **बदायूँ के राठौड़ों का वंशज** बताया है।
2. **कर्नल जेम्स टॉड, नैणसी एवं विश्वेश्वर नाथ रेऊ** ने मारवाड़ के राठौड़ों को **कन्नौज के जयचंद का वंशज** बताया है।
3. **भाटों की पोथियों** में राठौड़ों को **हिरण्यकश्यप की संतान** बताया है।
4. दयालदास ने **'राठौड़ों री ख्यात'** में राठौड़ों को **सूर्यवंशी** बताते हुए इन्हें ब्राह्मण भल्लराव की संतान बताया है।
5. **नैणसी री ख्यात, जोधपुर राज्य री ख्यात** व **पृथ्वीराज रासो** में राठौड़ों को **कन्नौज से** संबंधित बताया गया है।
6. कर्नल जेम्स टॉड राठौड़ों की वंशावलियों को आधार बनाकर इन्हें सूर्यवंशी मानते हैं।

◪ **जोधपुर के राठौड़ राजवंश का संस्थापक कौन था?**

पटवार–24.10.2022
III Grade (Hindi) –26.02.2023

(a) सीहा (b) सांगा
(c) जोधा (d) बीका

उत्तर (a) व्याख्या:–
राव सीहा (1243 – 1273 ई.)
- राव सीहा को मारवाड़ में **राठौड़ वंश का संस्थापक/आदिपुरुष/मूलपुरुष** माना जाता है।
- राव सीहा को कन्नौज के **जयचंद्र गहड़वाल का वंशज** माना जाता है।
- 1240 ई. में **पालीवाल ब्राह्मणों** की सहायता के लिए यह कन्नौज से मारवाड़ आया तथा खेड़ (बालोतरा) को अपनी राजधानी बनाया।
- **बीठू गाँव (पाली) के शिलालेख** के अनुसार राव सीहा सिंध के मुस्लिम लूटेरों के विरुद्ध गायों की रक्षा हेतु **1273 ई. में लाख झंवर के युद्ध (धौला चोतरा, पाली)** में लड़ते हुए शहीद हुए तथा पत्नी **पार्वती सोलंकी इनके साथ सती** हुई थी।
- **बीठू गाँव (पाली)** में राव सीहा की **छतरी** बनी हुई है।

◪ **निम्नलिखित राठौड़ वंश के राजाओं में से किसने साहस और कूटनीति के माध्यम से, मंडोर पर कब्जा कर लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया?**

EO & RO–14.05.2023 (S–1)

(a) राणा हम्मीर (b) राव चूंडा
(c) राव मालदेव (d) राव चन्द्रसेन

उत्तर (b) व्याख्या:–
राव चूंडा (1394 – 1423 ई.) —
- राव चूंडा को मारवाड़ के राठौड़ वंश का **वास्तविक संस्थापक तथा** मारवाड़ का प्रथम प्रतापी शासक माना जाता है।
- यह **वीरमदेव का पुत्र** था। वीरमदेव की मृत्यु के पश्चात् चूंडा का पालन-पोषण उसके चाचा मल्लीनाथ ने किया और उसे सालौड़ी गांव की जागीर प्रदान की।
- **इंदा प्रतिहारों** ने 1395 ई. में अपनी राजकुमारी का **विवाह** मारवाड़ के राव चूंडा के साथ कर दहेज में मंडोर प्रदान किया। **इंदा प्रतिहार राव चूंडा के सामन्त** बन गए।
- यहीं से **मारवाड़ में सामन्त प्रथा के बीज बोये** गए।
- राव चूंडा ने **मण्डोर को अपनी राजधानी** बनाया।
- राव चूंडा ने नागौर के शासक **जलाल खाँ खोखर** को मारकर **नागौर पर अधिकार** कर लिया तथा **नागौर में चूण्डासर नामक तालाब का निर्माण करवाया।**
- चूंडा की रानी **चाँद कँवर** ने जोधपुर में **चाँद बावड़ी** का निर्माण करवाया।
- रानी किशोर कंवर के प्रभाव में आकर चूंडा ने बड़े पुत्र रणमल के स्थान छोटे पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

➢ राव चूंडा प्रसिद्ध लोकदेवता मेहाजी मांगलिया के समकालीन थे।
➢ 1423 ई. में पूगल **(बीकानेर) के भाटियों द्वारा चूण्डा** की धोखे से हत्या कर दी गई।

मारवाड़ के राव चूण्डा के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए एवं निम्नांकित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:

RAS PRE EXAM–2025

A. राव चूण्डा को मण्डोर दहेज में प्राप्त हुआ ।
B. राव चूण्डा की मृत्यु के तुरंत पश्चात् राव रणमल राजगद्दी पर आसीन हुआ ।

(a) A और B दोनों सत्य हैं। (b) A और B दोनों असत्य हैं।
(c) केवल A सत्य है। (d) केवल B सत्य है।

उत्तर (c) व्याख्या:–
➢ राव चूंडा को इंदा प्रतिहारों से मंडोर दहेज में प्राप्त हुआ था।
➢ राव चूंडा की मृत्यु (1423 ई.) के तुरंत प्रश्चात राव कान्हा (1423-27 ई.) राजगद्दी पर आसीन हुआ।
➢ रानी किशोर कंवर के प्रभाव में आकर चूंडा ने कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। अत: इससे नाराज होकर चूंडा का ज्येष्ठ पुत्र रणमल मेवाड़ चला गया।
➢ रणमल ने अपनी बहिन हंसा बाई का विवाह मेवाड़ के महाराणा लाखा के साथ किया था।
➢ यह मेवाड़ के महाराणा मोकल व कुंभा का संरक्षक रहा था।
➢ रणमल ने 1427 ई. में मोकल की सहायता से मंडोर पर अधिकार कर लिया।
➢ मेवाड़ के सामंतों ने 1438 ई. में भारमली (रणमल की प्रेमिका) की सहायता से राव रणमल की चित्तौड़ में हत्या करवा दी।

निम्न में से किस राठौड़ नरेश ने मंडोर के प्रतिहारों से मंडोर का किला दहेज में प्राप्त किया?

[Lecturer & Coach Exam – 27.06.2025]

(a) राव आसनाथजी (b) राव धूहड़जी
(c) राव चूँडाजी (d) राव वीरमजी

उत्तर (c) व्याख्या:–
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मारवाड़ में राठौड़ वंश के शासकों का कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए–

1. राव सीहा **2. राव अस्थान**
3. राव दूहड़ **4. राव रायपाल**

VDO Mains – 9.7.2022

(a) 1, 3, 2, 4 (b) 1, 4, 3, 2
(c) 1, 3, 4, 2 (d) 1, 2, 3, 4

उत्तर (d) व्याख्या:–

राव सीहा (1240 – 1273 ई.)
➢ राव सीहा को मारवाड़ में **राठौड़ वंश का संस्थापक/आदिपुरुष/मूलपुरुष** माना जाता है।

राव आस्थान (1273 – 1291 ई.)
➢ यह 1291 ई. में **जलालुद्दीन खिलजी (दिल्ली)** के खिलाफ पाली की रक्षा करता हुआ **वीरगति** को प्राप्त हुआ।

राव धुहड़ (1291 – 1309 ई.)
➢ यह कर्नाटक से अपनी कुलदेवी नागणेची माता/**चक्रेश्वरी देवी** की मूर्ति लेकर आया तथा नागाणा (बालोतरा) में मंदिर का निर्माण करवाया।
➢ राव धुहड़ के पश्चात् **रायपाल, भीम, कनकपाल, छाड़ा, तीड़ा व राव मल्लीनाथ** इत्यादि मारवाड़ बने।

राव रायपाल (1309–1313 ई.)
➢ **राव रायपाल**, **राव धूहड़** का पुत्र था और उसने **खेड़ (बालोतरा)** क्षेत्र पर शासन किया। वह एक पराक्रमी और महत्वाकांक्षी शासक था, जिसने अपने अल्पकालीन शासन में कई महत्वपूर्ण सैन्य अभियान चलाए और अपने राज्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

राव जोधा ने किस वर्ष में जोधपुर नगर की स्थापना की?

PSI–15.09.2021

(a) 1113 ई. (b) 1459 ई.
(c) 1539 ई. (d) 1926 ई.

उत्तर (b) व्याख्या:–
➢ मई 1459 ई. में राव जोधा ने **मंडोर से छह मील दक्षिण में** प्रसिद्ध लोक देवी **करणी माता** के आशीर्वाद से **जोधपुर शहर** की स्थापना कर इसे अपनी **राजधानी** बनाया।
➢ राव जोधा ने **चिडियाटूँक पहाड़ी** पर **लाल पत्थर** से **मेहरानगढ़** दुर्ग का निर्माण करवाया जिसे **मयूरध्वज व गढ़ चिन्तामणि** के नाम से भी जाना जाता है।
➢ मेहरानगढ़ दुर्ग की **नींव करणी माता** के हाथों रखी गई थी। नींव में **राजिया (राजाराम)** नामक व्यक्ति की बलि दी गई थी।
➢ राव जोधा ने मेहरानगढ़ दुर्ग में **चामुंडा माता तथा नागणेची माता के मंदिर** का निर्माण करवाया था।
➢ अपनी **माता कोडमदे** के नाम पर जोधा ने **कोडमदेसर तालाब (बीकानेर)** का निर्माण करवाया।
➢ जोधा की हाड़ी रानी **जसमादे** ने मेहरानगढ़ दुर्ग में **राणीसर तालाब** का निर्माण करवाया।
➢ राव जोधा को मारवाड़ में **सामंत प्रथा का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है।

09

कच्छवाह वंश

कच्छवाह राजवंश/'ढूँढाड़' राज्य के संस्थापक थे-
पटवार–23.10.2021

(a) दूल्हेराय (b) भारमल
(c) जयसिंह (d) कोकिल देव

उत्तर (a) व्याख्या:–

- आमेर (ढूँढ़ाड़) के कच्छवाह राजवंश की स्थापना 1137 ई. में दूल्हेराय (तेजकरण) ने की।
- यह 1137 ई. में नरवर (ग्वालियर) से राजस्थान आया तथा बड़गुजरों को हराकर दौसा पर अधिकार कर लिया।
- दूल्हेराय ने दौसा को कच्छवाह राजवंश की प्रथम राजधानी बनाया।
- इसने मीणाओं को हराकर रामगढ़ पर अधिकार कर लिया तथा जमवारामगढ़ को कच्छवाहों की दूसरी राजधानी बनाया।
- दूल्हेराय ने जमवारामगढ़ में अपनी कुलदेवी जमवाय माता के मंदिर का निर्माण करवाया।
- आमेर के कच्छवाह स्वयं को **भगवान श्री राम** के पुत्र **कुश** का वंशज मानते हैं।
- आमेर के लेख (1612 ई.) में इन्हें 'रघुवंश तिलक' कहा गया है।
- सूर्यमल्ल मीसण के अनुसार कूर्म नामक रघुवंशी शासक की संतति होने से ये कूर्मवंशीय कहलाने लगे और साधारण भाषा में इन्हें कच्छवाह कहा जाने लगा।
- डॉ. ओझा की मान्यता है कि इनका मूल पुरुष कच्छवाह था जिससे इन्हें कच्छवाह कहा जाने लगा।
- कच्छवाह प्रारंभ में चौहानों के सामंत थे।

कछवाहा राजवंश की प्रथम राजधानी कहाँ थी?
खाद्य सुरक्षा अधिकारी–25.11.2019

(a) दौसा (b) जमवारामगढ़
(c) आम्बेर (d) जयपुर

उत्तर (a) व्याख्या:–

कच्छवाह वंश की राजधानियां		
क्रम	**राजधानी**	**स्थापनाकर्ता**
प्रथम	दौसा	दूल्हेराय
द्वितीय	जमवारामगढ़	दूल्हेराय
तृतीय	आमेर	कोकिलदेव
चतुर्थ	जयपुर	सवाई जयसिंह

निम्न में से कौन–से कछवाहा शासक ने मीणाओं को हराकर आमेर को अपनी राजधानी बनाया?
AEN (Mechanical) Diploma–20.05 2022
पटवार–24.10.2021 (Shift –1)

(a) दूल्हेराय (b) जयसिंह
(c) कोकिलदेव (d) मानसिंह

उत्तर (c) व्याख्या:–
कोकिलदेव (1207 ई.)

- कोकिलदेव ने **1207 ई.** में मीणाओं को पराजित कर **आमेर को अपनी राजधानी** बनाया। आमेर 1727 ई. तक कच्छवाहों की राजधानी रहा।
- कोकिलदेव ने अपने शासन काल में **खोह, झोटवाड़ा, गैटोर** आदि क्षेत्र के मीणाओं को हराकर राज्य विस्तार किया।
- इसने यादवों से मेड़ व बैराठ क्षेत्र जीते तथा आमेर में अम्बिकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

किस कछवाहा शासक ने मीणाओं से आमेर का अधिग्रहण कर अपने साम्राज्य में मिलाया?
[Lecturer & Coach Exam – 27.06.2025]

(1) दूल्हाराय (2) काकल
(3) हणूत देव (4) पंजबन रायजी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर (b) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'कोकिल देव' निम्न में से किस वंश से संबंधित है?
Asstt. Agri. Officer–28.05.2022

(a) गुहिल (b) चौहान
(c) राठौड़ (d) कच्छवाह

उत्तर (d) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

शासक पंजनदेव/पजवन निम्नलिखित में से किस राजवंश से संबंधित थे?
S.O.Exam–25.02.2024

(a) बड़गुर्जर (b) चौहान
(c) गुहिल (d) कच्छवाह

उत्तर (d) व्याख्या:-
- पंचवनदेव/पंजुनराय कच्छवाह वंश का एक शक्तिशाली शासक था।
- यह पृथ्वीराज चौहान तृतीय (अजमेर) का सामंत था।
- पृथ्वीराज ने इसे महोबा का प्रशासक नियुक्त किया।
- कच्छवाह प्रारंभ में चौहानों के सामंत थे।

आमेर राजा बिहारी मल की पुत्री का विवाह अकबर के साथ कहाँ हुआ?

महिला पर्यवेक्षक-29.11.2015

(a) सांगानेर (b) आमेर
(c) सांभर (d) चौंमू

उत्तर (c) व्याख्या:-
- सर्वप्रथम मजनू खां नामक व्यक्ति ने 1556 ई. में आगरा में अकबर व भारमल की मुलाकात करवाई।
- आमेर के राजा भारमल ने सर्वप्रथम 1562 ई. में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर सांभर में अपनी पुत्री हरखा बाई (बेगम मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर के साथ किया।
- कच्छवाह मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाला प्रथम राजपुत राजपरिवार था।
- जहांगीर (सलीम) हरखा बाई का पुत्र था।

मुगल शासक जहांगीर की माता किस राजपुत वंश से संबंधित थी?

REET Level-II -24.07.2022

(a) परमार (b) चौहान
(c) राठौड़ (d) कच्छवाह

उत्तर (d) व्याख्या:-
- मुगल बादशाह जहांगीर (सलीम) की माता हरखा बाई कच्छवाह राजपुत राजवंश से संबंधित थी।

जयपुर के किस शासक ने अपनी पुत्री का विवाह शहजादा सलीम से 1585 ई. में किया?

III Grade (SST)-26.02.2023

(a) भारमल (b) भगवंतदास
(c) मानसिंह (d) मिर्जाराजा जयसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
- भगवंतदास कच्छवाह ने अपनी पुत्री मानबाई (शाह-ए-बेगम) का विवाह शहजादे सलीम (जहांगीर) के साथ 1585 ई. में किया था।
- खुसरो मानबाई का पुत्र था। खुसरो के पितृद्रोही व्यवहार से दुखी होकर मानबाई ने आत्महत्या कर ली थी।

मुगलों से वैवाहिक सम्बन्ध करने वाला प्रथम राजपूत राजपरिवार कौन-सा था?

पुलिस उपनिरीक्षक-07.10.2018

(a) चौहान (b) राठौड़
(c) कच्छवाहा (d) गुहिलोत

उत्तर (c) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

किस राजपूत शासक को अकबर ने 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि दी थी-

Lab Asstt. Sci.-28.06.2022

(a) रामसिंह (b) भगवंतदास
(c) जसवंत सिंह (d) मानसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
- अकबर ने भगवंतदास को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की तथा 5000 का मनसबदार नियुक्त किया।
- भगवंतदास ने सरनाल (गुजरात) के मिर्जा विद्रोह का दमन किया। अत: अकबर ने इसे नगाड़ा व झंडा प्रदान किया।
- इसने 1585 ई. में फतेहपुर सीकरी नामक स्थान पर अकबर व दादू दयाल की मुलाकात करवाई थी।
- अकबर ने भारमल को भी अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की तथा 5000 का मनसबदार बनाया था।

निम्न में से किस शासक ने विराटनगर में मुगल दरवाजे का निर्माण करवाया?

संग्रहालयाध्यक्ष - 19.6.2024

(a) प्रताप सिंह (b) ईश्वरी सिंह
(c) राजा मानसिंह (d) माधोसिंह द्वितीय

उत्तर (c) व्याख्या:-

मिर्जा राजा मानसिंह-I (1589-1614 ई.)
- कच्छवाहा वंश के प्रतापी शासक मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम का **जन्म 1550 ई. में मौजमाबाद, (जयपुर)** में हुआ था।
- यह भारमल का पौत्र तथा भगवंतदास का पुत्र था।

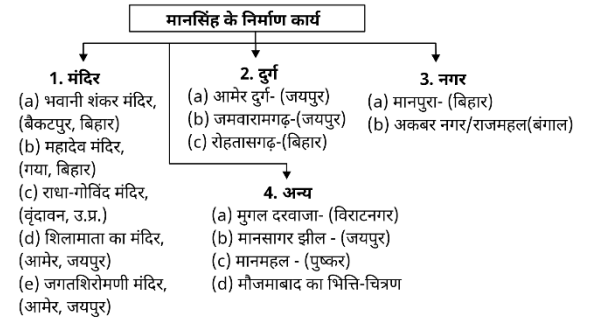

10 अन्य राजवंश

निम्नलिखित में से राजस्थान का कौनसा शासक राजवंश, यादव राजवंश से संबंधित है?
LDC Exam –12.08.2018

(a) राठौड़ (b) भाटी
(c) कच्छावाहा (d) सिसोदिया

उत्तर (b) व्याख्या:–
भाटी राजवंश -
- राजस्थान का **भाटी राजवंश** यादव वंश से संबंधित है।
- **प्राचीनकाल** में जैसलमेर क्षेत्र को **मांड प्रदेश** के नाम से जाना जाता था।
- भाटियों को **'उत्तर भड़ किवाड़ भाटी' तथा 'छत्राला यादवपति'** कहा जाता था क्योंकि भाटी वंश ने उत्तर भारत के रक्षक के रूप में लम्बे समय तक शासन किया।
- भाटी **चन्द्रवंशी** है तथा स्वयं को भगवान **श्रीकृष्ण के वशंज** मानते हैं।
- भाटी राजवंश के **कुलदेवता लक्ष्मीनाथजी** व **कुलदेवी स्वांगिया माता** है।
- भाटियों का **मूल स्थान पंजाब** था। सातवीं सदी के आरंभ में भाटी जाति का इस क्षेत्र में आगमन हुआ तथा भाटी राजवंश की स्थापना हुई।
- भट्टी को भाटी राजवंश का **आदिपुरुष/मूल पुरुष** माना जाता है।
- भट्टी के पुत्र **भूपत भाटी ने तीसरी शताब्दी में 'भटनेर दुर्ग'** का निर्माण करवाया और इसे अपनी राजधानी बनाया।
- **भाटियों की राजधानी का क्रम:** भटनेर, तनोट, लोद्रवा तथा जैसलमेर।

राजस्थान में यादव राजवंश कहाँ शासनकर्ता थे?
जेल प्रहरी परीक्षा 27–10–2018, Shift–I

(a) केवल जैसलमेर
(b) करौली, जैसलमेर एवं बीकानेर में
(c) करौली एवं जैसलमेर दोनों में
(d) केवल करौली

उत्तर (c) व्याख्या:–
- राजस्थान में जैसलमेर तथा करौली में यदुवंशी क्षत्रियों का शासन था।
- जैसलमेर में यदुवंश की भाटी तथा करौली में जादौन शाखा का शासन था।
- करौली का यादव राजवंश स्वयं को **चन्द्रवंशी क्षत्रिय** एवं भगवान श्रीकृष्ण का वंशज मानता है।
- महाभारत काल में करौली **शूरसेन जनपद** का भाग था। शूरसेन जनपद की राजधानी **मथुरा** थी।
- कैला देवी को करौली के **जादौन राजवंश** की कुलदेवी माना जाता है।

निम्न में से किसने करौली को अपनी राजधानी बनाया?
वनपाल–06.11.2022(S–II)

(a) विजयपाल प्रथम (b) अर्जुनपाल द्वितीय
(c) नरसिंहपाल (d) धर्मपाल द्वितीय

उत्तर (d) व्याख्या:–
- विजयपाल ने 1040 ई. में करौली में यदुवंश की स्थापना की तथा बयाना दुर्ग का निर्माण करवाया।
- अर्जुनपाल ने 1348 ई. में **कल्याणपुर बसाया** जिसे वर्तमान में **'करौली'** के नाम से जाना जाता है।
- अर्जुनपाल ने करौली में **'अंजनी माता का मंदिर'** एवं **'गढ़कोट का दुर्ग'** बनवाया।
- धर्मपाल द्वितीय ने 1650 ई. में करौली को अपनी राजधानी बनाया।
- गोपालपाल ने करौली में मदनमोहन मंदिर का निर्माण करवाया।

करौली के किस महाराजा को मुगल शासक अकबर ने 'देव बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया?
Archivist–03.08.2024

(a) महाराजा तुरसन पास (b) महाराजा चन्द्रसेन
(c) महाराजा गोपाल दास (d) महाराजा जुहार पाल

उत्तर (c) व्याख्या:–
- मुगल शासक अकबर ने करौली के महाराजा गोपालदास को 'देव बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया था।

किसमें 'अर्द्ध साका' हुआ?
II Grade GK – 24.12.2022
RPSC III Grade Teacher Exam–2006

(a) गागरोण (b) चित्तौड़गढ़
(c) जैसलमेर (d) रणथम्भौर

उत्तर (c) व्याख्या:–
- जैसलमेर दुर्ग में **'अर्द्ध साका'** हुआ था। यह किला अपने 'अढ़ाई साकों' के लिए प्रसिद्ध है।
- जैसलमेर का पहला साका **अलाउद्दीन खिलजी के सेनानायक कमालुद्दीन गुर्ग** के आक्रमण के समय हुआ। इस समय **मूलराज व रतनसिंह** के नेतृत्व में वीरों ने साका किया था।

- दूसरा साका **मुहम्मद बिन तुगलक** के आक्रमण के समय हुआ था। इस समय **रावल दूदा व त्रिलोकसी** के नेतृत्व में भाटी वीर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए तथा महिलाओं ने **जौहर** किया।
- अर्द्ध साका 1550 ई. में रावल लूणकर्ण के शासनकाल में हुआ था। इस समय कंधार के राज्यच्युत शासक व लूणकर्ण के शरणागत अमीर अली ने धोखे से दुर्ग पर आक्रमण कर दिया था।
- इस युद्ध में रावल लूणकर्ण के नेतृत्व में भाटी वीरों ने केसरिया किया परन्तु भाटियों की जीत के कारण वीरांगनाओं ने जौहर नहीं किया। इस कारण इसे अर्द्ध साका कहा जाता है।

जैसलमेर में 1550 ई. में वहाँ के शासक लूणकरण के समय अर्द्धसाका हुआ, क्योंकि इसमें-

RPSC III Grade Teacher Exam-2006

(a) केसरिया तो हुआ किन्तु जौहर नहीं हुआ।
(b) जौहर तो हुआ किन्तु केसरिया नहीं हुआ।
(c) केसरिया भी हुआ और जौहर भी हुआ।
(d) केसरिया भी नहीं हुआ और जौहर भी नहीं हुआ।

उत्तर (a) व्याख्या:-

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भाटी वंश का अंतिम शासक कौन था?

पटवार प्रथम पारी 17 अगस्त 2025

(a) हरराय भाटी (b) लूणकरण
(c) विजयराज (d) जवाहर सिंह

उत्तर (d) व्याख्या:-

महारावल जवाहरसिंह (1914-49 ई.)

- भाटी वंश का अंतिम शासक जवाहरसिंह था।
- इसे **आधुनिक जैसलमेर का निर्माता** भी कहा जाता है।
- जवाहरसिंह की **शिक्षा-दीक्षा मेयो कॉलेज अजमेर में** हुई।
- इसने प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटिश शासन की सहायता की थी।
- इसने **जवाहर विलास तथा जवाहर निवास** नामक महलों का निर्माण करवाया था।
- इसके शासनकाल में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी **सागरमल गोपा** की जेल में अमानवीय यातनाएँ देकर 04 अप्रैल, 1946 को हत्या कर दी गई।

जाट वंश का 18वीं शताब्दी के मध्य में किन भूभागों पर आधिपत्य था?

RPSC III Grade Teacher Exam-2004

(a) भरतपुर एवं धौलपुर
(b) धौलपुर एवं करौली
(c) अलवर एवं भरतपुर
(d) भरतपुर एवं करौली

उत्तर (a) व्याख्या:-

- राजस्थान में **दो जाट रियासतें 'भरतपुर'** तथा **'धौलपुर'** थी।
- लोक मान्यता के अनुसार, **भरतपुर** का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान **श्रीराम** के छोटे भाई **'भरत'** के नाम पर रखा गया।
- लक्ष्मण को जाट राजवंश का कुलदेवता माना जाता है।
- इस वंश के राजचिह्न में 'लक्ष्मण' का नाम अंकित था।
- भरतपुर में राजस्थान का एकमात्र लक्ष्मण मंदिर स्थित है।
- राजेश्वरी माता को भरतपुर के सिनसिनवार जाट राजवंश की कुलदेवी माना जाता है।
- इस क्षेत्र में जाट शक्ति का उदय औरंगजेब के समय में हुआ। औरंगजेब ने जब हिंदू मंदिरों को तुड़वाया तथा जजिया कर लगाकर प्रताड़ित किया, तब इस क्षेत्र के जाट किसानों ने आंदोलन कर दिया।

महाराजा सूरजमल किस राज्य के शासक थे?

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-06.11.2020 (11)

(a) बीकानेर
(b) अलवर
(c) टोंक
(d) भरतपुर

उत्तर (d) व्याख्या:-

महाराजा सूरजमल (1756-63 ई.)

- महाराजा सूरजमल भरतपुर राज्य के प्रसिद्ध जाट शासक थे।
- सवाई जयसिंह की मृत्यु के पश्चात हुए उत्तराधिकार युद्ध में सूरजमल ने सवाई ईश्वरीसिंह का पक्ष लिया था।
- सूरजमल ने 1754 ई. में भरतपुर पर हुए मराठा सरदार **मल्हारराव होल्कर** के आक्रमण को विफल किया।
- **पानीपत के तृत्तीय युद्ध (जनवरी 1761 ई.)** में मराठों को **अहमदशाह अब्दाली** के हाथों पराजित होना पड़ा। इस युद्ध के पश्चात् लगभग 50,000 मराठा अपने परिवारों सहित महाराजा सूरजमल की शरण में आ गए। अब्दाली की चेतावनी के उपरांत भी सूरजमल ने मराठा सरदारों को अब्दाली को नहीं सौंपा।
- **1763 ई.** में रूहेलों के विरुद्ध युद्ध में सूरजमल का 55 वर्ष की आयु में **देहांत** हो गया।
- महाराजा सूरजमल के बारे में **कालिकारंजन कानूनगो** का कथन है कि- **"उसमें अपनी जाति के सभी गुण शक्ति, साहस, चतुराई, निष्ठा और कभी पराजय स्वीकार न करने वाली अदम्य भावना विद्यमान थी।"**

11 मध्यकालीन प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

राजस्थान के राजवंशों की राजस्व प्रणाली के अन्तर्गत किस प्रकार की भूमि को राजा की निजी सम्पत्ति माना जाता था?

JEN (Civil) Diploma - 18.05.2022

(a) भोम (b) जागीर
(c) हवाला (d) खालसा

उत्तर (d) व्याख्या:-

➢ मध्यकालीन राजस्थान में स्वामित्व के आधार पर भूमि को **4 भागों में विभाजित** किया जाता है-

i. **खालसा भूमि -** यह भूमि राज्य के स्वामित्व (सीधे राजा के अधीन) में होती थी। अत: इसे केंद्रीय भूमि भी कहा जा सकता है। इस भूमि को राजा की निजी संपत्ति माना जाता था।

ii. **जागीर भूमि –** राज्य सेवा, सैनिक सेवा या अन्य सेवा के बदले दी गई भूमि जागीर भूमि कहलाती थी। यह भूमि जागीरदारों या सामंतों के नियंत्रण में होती थी। जागीर भूमि चार प्रकार की होती थी-

1. **सामंत जागीर –** राजा द्वारा अपने भाई-बंधुओं तथा निकट संबंधियों को दी जाने वाली भूमि जिस पर उनका वंशानुगत अधिकार होता था, सामंत जागीर कहलाती थी।
2. **हुकुमत जागीर –** राजा द्वारा अपने कर्मचारी (मुत्सद्दी) को वेतन के बदले दी जाने वाली भूमि जिस पर उसका वंशानुगत अधिकार नहीं होता था, हुकुमत जागीर कहलाती थी।
3. **भौम जागीर -** इस भूमि पर लगान नहीं देना पड़ता था, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर भोमियों से राजकीय सहायता के लिए सेवाएँ ली जाती थी। राज्य सेवा में शहीद होने वाले लोगों के परिवारों को यह भूमि दी जाती थी।
4. **सासण जागीर –** धर्मार्थ (मंदिर-मस्जिद), शिक्षण कार्य, साहित्य लेखन कार्य करने वालों तथा चारणों व भाटों को अनुदान स्वरूप दी जाने वाली भूमि सासण जागीर कहलाती थी। यह जागीर करमुक्त होती थी। इस कारण इसे माफी जागीर भी कहा जाता था।

कौन-सा कथन सही नहीं है?

RAS Pre. - 19.11.2013

(a) खालसा भूमि राजा के नियंत्रण में होती थी।
(b) जागीरी भूमि पर जागीरदार या ठिकानेदार का पैतृक नियंत्रण होता था।
(c) भोमियों को कुछ भूमि उनकी चौकीदारी की सेवाओं तथा मागों की सुरक्षा के कर्तव्यों को पूरा करने के लिये दी जाती थी।
(d) चरणौता भूमि पर राजा का नियंत्रण होता था।

उत्तर (d) व्याख्या:-

1.	**चरणौता**	चरागाह या गौचर भूमि।
2.	**बीड़**	नदी-नाले के समीप वाली भूमि।
3.	**डीमड़ू**	कुएँ के पास की भूमि।
4.	**गोरमो**	गाँव के पास वाली भूमि।
5.	**माल**	काली उपजाऊ भूमि।
6.	**पीवल**	सिंचित भूमि।
7.	**बारानी**	असिंचित भूमि।
8.	**बंजर**	अनुपजाऊ भूमि
9.	**चाही भूमि**	कुओं, नहरों, नदियों तथा तालाबों से सिंचित भूमि।
10.	**तलाई भूमि**	तालाब के पेटे की भूमि , जहाँ बिना सिंचाई फसल पैदा हो।
11.	**हकत-बकत**	जोती जाने वाली भूमि।
12.	**गलत हॉस**	पानी से भरी भूमि।

मध्यकालीन राजस्थान के भूमि एवं राजस्व व्यवस्था के संबंध में निम्न में से कौनसा / से कथन सत्य है/हैं?

Revenue Officer Exam – 23.03.2025

(अ) उपजाऊ भूमि 'माल' व पहाड़ी भूमि 'मगरा' कहलाती थी।
(ब) सर्दी में पैदा फसल 'सियालू' व गर्मियों में पैदा होने वाली फसल 'उनाल' कहलाती थीं।
(स) उपज पर करं का निर्धारण 'लाटा एवं कूंता' प्रणाली से होता था।

(a) केवल (अ) (b) (अ), (ब) एवं (स)
(c) (अ) एवं (ब) (d) (अ) एवं (स)

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'जागीर' शब्द किस भाषा से लिया गया है?

वनरक्षक-11.12.2022(S-II)

(a) हिन्दी (b) मारवाड़ी
(c) संस्कृत (d) फारसी

उत्तर (d) व्याख्या:-

➢ जागीर फारसी भाषा का शब्द है।

➢ प्रो. इरफान हबीब ने जागीर शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है- "जागीर दो शब्द जय + गीर का संयुक्त रूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ है राज्य द्वारा प्रदत्त भूमि का वह भाग जिससे उस भू-क्षेत्र से राजस्व वसूल करने का वैधानिक अधिकारी होता था।" जागीरदार इस भूमि को न तो बेच सकता था और न ही किसी अन्य के नाम स्थानान्तरित कर सकता था।

➢ बड़े जागीरदार को ठाकुर कहा जाता था। 'कामदार' उस ठिकाने के राजस्व और सामान्य प्रशासन को देखता थ। जागीरदार की निःसंतान मृत्यु होने पर उसकी जागीर खालसा करली जाती थी जिसे 'राजगामिता' कहा जाता था।
➢ कर्नल जेम्स टॉड प्रथम अंग्रेज इतिहासकार था जिसने राजस्थान की जागीरदारी (फ्यूडलिज्म) व्यवस्था पर लिखा है।

राजस्थान के प्रत्येक राज्य में महकमा बकायत होता था, जो-

RAS Pre. Exam-2009

(a) अच्छी फसल के समय शेष-राजस्व वसूलता था।
(b) राजा के बकायों का भुगतान करता था।
(c) सरकारी कर्मचारियों की बकाया संग्रह करता था।
(d) राजाओं के लिए ऋण संग्रह करता था।

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ दीवान मुख्य रूप से अर्थ विभाग का अध्यक्ष होता था। इसके दफ्तर को 'दीवान-ए-हजूरी' कहा जाता था।
➢ इसके दफ्तर में "महकमा-ए- बकायात' होता था जो अच्छी फसल के समय शेष राजस्व को वसूलता था।
➢ दीवान के कामों में मुख्य रूप से आर्थिक कार्य, कोष और कर संग्रह के कार्य थे। इसके नीचे कई कारखाने जात के दरोगा, रोकड़ियाँ, मुंशी, पोतदार आदि होते थे।
➢ प्रत्येक विभाग के सभी कार्यों के विवरण इसके पास आते थे। राज्य की नियुक्तियाँ, पदोन्नति, स्थानान्तरण आदि सम्बन्धी निर्णय उसकी सम्मति के बिना नहीं लिए जाते थे। उसकी स्वतंत्र मुहर होती थी जिस पर उसका नाम खोदा गया था।
➢ यह राजा को आर्थिक, वित्तीय तथा राजस्व संबंधी परामर्श देता था तथा परगनों में हाकिम की नियुक्ति की सिफारिश करता था।
➢ जिन राज्यों में प्रधान पद का प्रावधान नहीं था वहाँ दीवान प्रधान का कार्य भी करता था।
➢ राजा की अनुपस्थिति में वह राज्य संभालता था तब उसे 'देश दीवान' कहा जाता था।

ईजारा किसके लिए जाना जाता है?

RAS-2001

(a) भूमि मूल्यांकन (b) मुद्रा परिवर्तन
(c) राजस्व की ठेका प्रणाली (d) स्वर्ण की खरीद

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ यह राजस्व की एक ठेका प्रणाली थी। इसे ठेका अथवा आकबंदी के नाम से भी जाना जाता था।
➢ इसके अनुसार एक निश्चित परगना अथवा क्षेत्र से राजस्व वसूली का अधिकार सार्वजनिक नीलामी द्वारा उच्चतम बोली लगाने वाले की निश्चित अवधि के लिए दे दिया जाता था।

मध्यकालीन राजस्थान के राज्यों में शासक के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी जाना जाता था-

RAS 2015
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल-14.6.2024 (1)
Protection Off. 28.1.2023

(a) दीवान (b) प्रधान
(c) मुसाहिब (d) अमात्य

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ मध्यकालीन राजस्थान के राज्यों में शासक के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पद/अधिकारी प्रधान होता था। यह शासन, सैनिक तथा न्याय संबंधी कार्यों में राजा की सहायता करता था।
➢ महाराणा रायमल का प्रधान पंचोली हिम्मत था।
➢ सांगा के समय गिरधर पंचौली प्रधान पद पर था।
➢ उदय सिंह का प्रधान शाह आशा तथा महाराणा प्रताप का प्रधानमंत्री भामाशाह था।
➢ अमर सिंह के समय प्रधान को 'मुख्यमंत्री' कहते थे और वह डूंगरशाह था। राजसिंह के समय प्रधान को 'मंत्रीप्रवर' कहते थे।
➢ कोटा-बूंदी में प्रधान को 'दीवान' या 'फौजदार, बीकानेर-भरतपुर में 'मुखत्यार', जयपुर में 'मुसाहिब' तथा मेवाड़, मारवाड़ व जैसलमेर में 'प्रधान' कहा जाता था।

8वीं से 12वीं सदी के समाज में राजस्थान में प्रचलित अधिकारी 'अक्षपटलिक' का संबंध किस से था?

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-14.07.2018 (II)

(a) कृषि कार्य पर नजर रखने वाला अधिकारी
(b) राज्य में आय-व्यय का ब्यौरा रखने वाला अधिकारी
(c) राजकोष और आभूषणों को रखने वाला अधिकारी
(d) विदेश नीति से संबंधित अधिकारी

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ मेवाड़ के गुहिल शासक अल्लट के सारणेश्वर शिलालेख (953 ई.) में अमात्य, सांधिविग्रहिक, अक्षपटलिक, भिषगाधिराज व बन्दिपति नामक पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है। अल्लट को मेवाड़ में नौकरशाही का संस्थापक माना जाता है।
➢ **अक्षपटलिक -** यह राज्य में आय-व्यय का ब्यौरा रखने वाला अधिकारी था। यह राज्य में मुख्य लेखाधिकारी के रूप में काम करता था।
➢ **संधिविग्रहिक -** यह युद्ध और संधि का मंत्री होता था। इसे कई भाषाओं और लिपियों का ज्ञान होता था तथा यह सभी आदेशों और विदेशों के लिए पत्र तैयार करता था।
➢ **भिषगाधिराज -** यह राजवैध होता था।
➢ **बन्दिपति -** यह दरबार में कविता पाठ करता था।

12 ब्रिटिशकालीन संधियाँ

अंग्रेजों से संधि करने वाला राजस्थान का प्रथम राज्य कौनसा था?

[उद्योग प्रसार अधिकारी-22.08.2018]

(a) भरतपुर (b) कोटा
(c) बूँदी (d) अलवर

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीत सिंह के साथ 29 सितम्बर, 1803 ई. को लॉर्ड वैलेजली ने सहायक संधि की।

भरतपुर एवं अलवर ने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधियाँ की थी।

[प्रयोगशाला सहायक 13.11.16]

(a) सितम्बर-नवम्बर, 1803
(b) अगस्त-अक्टूबर, 1804
(c) जनवरी-फरवरी, 1804
(d) मार्च-मई, 1806 में

उत्तर (a) व्याख्या:-

➢ 29 सितम्बर 1803 ई. को भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह एवं 14 नवम्बर 1803 ई. को अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ सहायक संधि की थी।

1803 में अंग्रेजों के साथ संधि करने वाले अलवर राज्य के शासक का नाम बताइये-

[JEN (यांत्रिकी) डिप्लोमा - 13.12.2020]

(a) प्रतापसिंह (b) बख्तावरसिंह
(c) रणजीतसिंह (d) जयसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह ने 1803 ई. में अंग्रेजों के साथ सहायक संधि की तथा इस संधि के तहत अलवर के राजा ने 01 नवम्बर 1803 ई. को लसवाड़ी (अलवर) के युद्ध में मराठों के विरूद्ध अंग्रेजों का सहयोग किया था।

राजपूताना रियासतों की 1817 1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सन्धि का सही कालाक्रमानुसार है?-

[RAS-19.11.2013]
[JEN (Civil) Degree 12.09.2021]

(A) कोटा (B) जोधपुर
(C) करौली (D) उदयपुर

(a) (A), (B), (C), (D) (b) (C), (D), (A), (B)
(c) (D), (A), (B), (C) (d) (C), (A), (B), (D)

उत्तर (d) व्याख्या:-

रियासत	तत्कालीन शासक	संधि की तिथि
करौली	हरबक्षपाल सिंह	9 नवम्बर, 1817 ई.
टोंक	नवाब अमीर खाँ पिण्डारी	15 नवम्बर, 1817 ई.
कोटा	महाराजा उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817 ई.
जोधपुर	महाराजा मानसिंह	06 जनवरी, 1818 ई.
उदयपुर	महाराणा भीम सिंह	13 जनवरी, 1818 ई.
बूंदी	महाराव विष्णु सिंह	10 फरवरी, 1818 ई.
बीकानेर	महाराजा सूरत सिंह	21 मार्च, 1818 ई.
जयपुर	सवाई जगतसिंह-II	15 अप्रैल, 1818 ई.
किशनगढ़	महाराजा कल्याण सिंह	07 अप्रैल, 1818 ई.
जैसलमेर	महारावल मूलराज द्वितीय	12 दिसम्बर, 1818 ई.
प्रतापगढ	महारावल सामंत सिंह	05 अक्टूबर, 1818 ई.
डूंगरपुर	महारावल जसवंत सिंह	11 दिसम्बर, 1818 ई.
बाँसवाडा	महारावल उम्मेद सिंह	25 दिसम्बर, 1818 ई.
सिरोही	महाराजा शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823 ई. (सबसे अन्त में)

सिरोही राज्य के साथ अंग्रेजों ने संधि कब की थी?
[Research Officer-4.8.2024]
[वनपाल-06.11.2022(11), 11.12.2022(a)]
(a) 1817 ई. (b) 1818 ई.
(c) 1822 ई (d) 1823 ई.

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ सिरोही के महाराजा शिवसिंह ने 11 सितम्बर 1823 ई. को अंग्रेजों के साथ सहायक संधि की।

दिसम्बर, 1817 में अंग्रेजों के साथ संधि के समय कोटा के महाराव कौन थे?
[वनरक्षक-13.12.2022(S-1)]
(a) उम्मेदसिंह-I (b) किशोरसिंह
(c) रामसिंह (d) रामसिंह-II

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ दिसम्बर, 1817 ई. में अंग्रेजों के साथ सहायक संधि के समय कोटा का महाराव उम्मेद सिंह प्रथम था।
➢ कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिम सिंह और गवर्नर जनरल के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ ने मिलकर 26 दिसम्बर, 1817 ई. को कोटा राज्य के साथ होने वाली संधि की शर्तें तय की।
➢ इस संधि में कुल 11 धाराएं थी, जिसमें 11वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालो के नाम है।

अंग्रेजों ने अमीर खाँ को किस वर्ष टोंक के नवाब की मान्यता प्रदान की?
[CET-5.2.2023 (S-II)]
(a) 1816 ई. (b)1817 ई.
(c) 1818 ई. (d) 1823 ई.

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ अंग्रेजों ने 1817 ई. में टोंक रियासत की स्थापना कर अमीर खॉ पिण्डारी को यहां का नवाब नियुक्त किया था।

जयपुर के किस कछवाहा शासक ने 1818 में ईस्ट इंडिया कम्पनी से संधि की –
[पशुधन सहायक 04 6.2022]
[कनिष्ठ अनुदेशक (कोपा)- 20.3.2019]
(a) सवाई प्रतापसिंह (b) पृथ्वीराज
(c) महाराजा जगतसिंह-II (d) महाराजा विष्णुसिंह

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ जयपुर के महाराजा सवाई जगत सिंह द्वितीय ने 15 अप्रैल, 1818 ई. को अंग्रेजों के साथ सहायक संधि की।

किशनगढ़ के किस शासक ने 07 अप्रैल, 1818 को ब्रिटिश कम्पनी के साथ संधि की?
क. अनुदेशक-4.1.2025
(a) महाराजा जगतसिंह (b) महाराजा मानसिंह
(c) महाराजा विशनसिंह (d) महाराजा कल्याणसिंह

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सन्धि करने वाला अन्तिम राज्य था-
[पटवार परीक्षा 2011]
[कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक (जैविक) 15.9.2019]
(a) अलवर (b) सिरोही
(c) मेवाड़ (d) बीकानेर

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ अंग्रेजों के साथ सर्वप्रथम संधि करने वाली रियासत – करौली
➢ अंग्रेजों के साथ सबसे अंत में संधि करने वाली रियासत – सिरोही।

अंग्रेजों के साथ करौली राज्य की संधि कब हुई थी-
[JIEN (यांत्रिकी/विद्युत) डिग्री -26.12.2020]
(a) 9 नवम्बर, 1817 (b) 9 दिसम्बर, 1817
(c) 9 फरवरी, 1818 (d) 9 मार्च, 1818

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी?
[RAS-5.8.2018] [महिला पर्यवेक्षक - 29.11.2015]
[CET : 7.1.2023 (S-1)]
[क. वैज्ञानिक सहायक (रसायन) 14.9.2019]
[Librarian Gra.-III-19.9.20]
[JEN (विद्युत) डिप्लोमा -29.11.20]
(a) डेविड ऑक्टरलोनी (b) चार्ल्स मेटकॉफ
(c) आर्थर वेलेजली (d) जॉन जॉर्ज

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823) ने 'घेरे की नीति' के स्थान पर 'अधीनस्थ पार्थक्य की नीति' का क्रियान्वयन किया।
➢ संधियाँ करने का कार्य दिल्ली के रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को सौंपा गया जिसने इन राज्यों के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधिपत्र तैयार किए।
➢ चार्ल्स मेटकॉफ का निमंत्रण पाते ही 1818 ई. के अंत तक सिरोही राज्य को छोड़कर सभी राज्यों ने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली।

13 1857 की क्रांति

राजस्थान में 1857 की क्रांति के समय यहाँ के ए.जी.जी. (एजेन्ट टू गवर्नर जनरल) कौन थे?
EEO-19.06.2024

(a) कप्तान ब्लेक (b) हेनरी लॉरेन्स
(c) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स (d) कप्तान हीथकोट

उत्तर (c) व्याख्या:-
एजेंट टू गवर्नर जनरल (ए.जी.जी.) -
- राजस्थान के प्रथम ए.जी.जी. – **अब्राहम लॉकेट**
- 1857 की क्रांति के समय ए.जी.जी. – **जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस**
- राजस्थान के अंतिम ए.जी.जी. – **ए.सी. लोथियन**
- ए.जी.जी. का मुख्यालय – **अजमेर**

राजपूताना एजेन्सी की स्थापना ..... में और ..... में हुई थी।
प्रयोगशाला सहायक 13.11.16
व्याख्याता-2007

(a) 1835, नागौर (b) 1830, जोधपुर
(c) 1829, जयपुर (d) 1832, अजमेर

उत्तर (d) व्याख्या:-
- राजपूताना एजेंसी की स्थापना 1832 ई. में अजमेर में की गई थी।
- 1845 ई. में इसका मुख्यालय अजमेर से परिवर्तित करके माउण्ट आबू (सिरोही) बना दिया गया।
- कालान्तर में ए.जी.जी. का शीतकालीन मुख्यालय अजमेर व ग्रीष्मकालीन मुख्यालय माउण्ट आबू में स्थापित किया गया।

ए.जी.जी. का मुख्यालय अजमेर से परिवर्तित कर दिया गया, नया मुख्यालय किस स्थान पर था?
Assistant Archivist-03.08.2024

(a) डूंगरपुर (b) उदयपुर
(c) माउन्ट आबू (d) सिरोही

उत्तर (c) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

अंग्रेजों के शासनकाल में राजस्थान में पॉलिटिकल रेजीडेण्ट्स का मुख्यालय था?
[जेल प्रहरी परीक्षा-2017]

(a) आबू (b) अजमेर
(c) कोटा (d) नसीराबाद

उत्तर (b) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान में रियासतों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए AGG का पद कब सृजित किया गया?
जेल प्रहरी परीक्षा 21-10-2018, Shift-III

(a) 1832 ई.
(b) 1386 ई.
(c) 1830 ई.
(d) 1834 ई.

उत्तर (a) व्याख्या:-
- राजस्थान में रियासतों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए 1832 ई. में अजमेर में ए.जी.जी. मुख्यालय की स्थापना की गई।

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जो भोजन सामग्री क्रांतिकारी सन्देश के साथ गाँवों में वितरित की जाती थी, वह थी?
[पटवार परीक्षा 2008]

(a) पूड़ी (b) रोटी
(c) परांठा (d) ब्रेड

उत्तर (b) व्याख्या:-
- **1857 की क्रांति का प्रतीक चिह्न -** कमल का फूल और चपाती
- **क्रांति के समय इंग्लैण्ड की महारानी -** विक्टोरिया
- **क्रांति के समय इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री -** लॉर्ड पामर्स्टन
- **क्रांति के समय भारत का गवर्नर जनरल -** लॉर्ड केनिंग
- **क्रांति के समय अजमेर-मेरवाड़ा का कमिश्नर -** कर्नल डिक्सन
- **क्रांति के समय उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रान्त का मुख्यालय -** आगरा
- **राजस्थान के पहले रेजीडेन्ट फॉर राजपूताना -** डेविड ऑक्टरलोनी
- **क्रांति के समय अंग्रेजों का शस्त्रागार -** अजमेर

सन् 1857 ई. के विद्रोह के समय राजस्थान में सैनिक छावनियाँ थी -
Asst. Town Planner- 16.6.2023

(a) चार
(b) पाँच
(c) छ:
(d) सात

उत्तर (c) व्याख्या:-
सैनिक छावनियाँ -

1857 की क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियाँ			
क्र. सं.	**छावनी**	**वर्तमान जिला**	**सैनिक टुकड़ियाँ**
1.	नसीराबाद	अजमेर	15वीं बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री
2.	नीमच	मेवाड़	मालवा, मेवाड़ राजपूताना रेजीमेंट
3.	एरिनपुरा	मारवाड़	जोधपुर लीजन
4.	ब्यावर	अजमेर	मेर रेजीमेंट
5.	खैरवाड़ा	उदयपुर	मेवाड़ भील कोर
6.	देवली	टोंक	कोटा कन्टिनजेंट

1857 ई. में राजपूताना की छः ब्रिटिश छावनियों में से कौन सी सबसे शक्तिशाली छावनी थी?
Asstt. Prof. - 07.01.2024
(a) नसीराबाद (b) एरिनपुरा
(c) नीमच (d) खैरवाड़ा

उत्तर (a) व्याख्या:-
- सन् सत्तावन की क्रांति के समय राजपूताना में अंग्रेजों की 6 सैनिक छावनियाँ थी।
- इन सभी सैनिक छावनियों में कुल पाँच हजार भारतीय सैनिक तथा 30 अंग्रेज अधिकारी थे।
- इन छावनियों में से अंग्रेजों की सबसे बड़ी व शक्तिशाली सैनिक छावनी 'नसीराबाद' व सबसे छोटी सैनिक छावनी 'देवली' थी।
- ब्यावर व खैरवाड़ा (उदयपुर) सैनिक छावनियों ने क्रांति में भाग नहीं लिया था।

देवली सैनिक छावनी की स्थापना कब हुई?
[Lecturer & Coach Exam – 27.06.2025]
(a) 1850 ईस्वी (b) 1855 ईस्वी
(c) 1860 ईस्वी (d) 1864 ईस्वी

उत्तर (b) व्याख्या:-
- देवली सैनिक छावनी की स्थापना 1855 ई. में हुई थी।
- 1921 ई. में 42वीं देवली रेजीमेंट व 43वीं एरिनपुरा रेजीमेंट को समाप्त कर दिया गया। इनके स्थान पर मीणा कोर (1921 ई.) की स्थापना की गई।
- नसीराबाद सैनिक छावनी की स्थापना 1818 ई. में डेविड ऑक्टरलोनी ने की थी।

राजस्थान में 1857 की क्रांति सर्वप्रथम कहाँ हुई थी?
III Grade (Hindi) -26.02.2023
(a) आउवा (b) एरनपुरा
(c) नसीराबाद (d) देवली

उत्तर (c) व्याख्या:-
- राजस्थान में 1857 की क्रांति की शुरुआत **28 मई, 1857** ई. को नसीराबाद छावनी में **15वीं बंगाल नेटिव इंफेन्ट्री** के सैनिकों द्वारा बख्तावर सिंह के नेतृत्व में की गई थी।

राजस्थान में 1857 का विद्रोह सबसे पहले कहाँ शुरू हुआ था?
राज. पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा-14.09.2025 (I SHIFT)
(a) जयपुर (b) उदयपुर
(c) जोधपुर (d) नसीराबाद

उत्तर (d) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान में 1857 के विद्रोह का प्रारंभ कहाँ से हुआ था?
BSTC-2025
(a) एरिनपुरा (b) खेरवाड़ा
(c) देवली (d) नसीराबाद

उत्तर (d) व्याख्या:-
- राजस्थान में 1857 के विद्रोह का प्रारंभ सर्वप्रथम नसीराबाद सैनिक छावनी से 28 मई 1857 ई. को प्रारंभ हुआ था।

राजस्थान में क्रांति का प्रारम्भ 28 मई, 1857 को नसीराबाद छावनी के किन सैनिकों द्वारा हुआ?
वनरक्षक-11.12.2022(S-I)
(a) राजपूताना राइफल्स
(b) बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री
(c) गोरखा राइफल्स
(d) कुमायूँ रेजीमेन्ट

उत्तर (b) व्याख्या:-
- सन् सत्तावन की क्रांति के समय नसीराबाद सैनिक छावनी में 15वी बंगाल नेटिव इन्फेंट्री, 30वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री, भारतीय तोप खाने की सैनिक टुकड़ी तथा पहली (फर्स्ट) बंबई लांसर्स के सैनिक विद्यमान थे।
- 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री द्वारा बख्तावर सिंह के नेतृत्व में नसीराबाद छावनी में सैनिक विद्रोह प्रारंभ हुआ था।
- 30 मई 1857 ई. को 30वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के सैनिक भी विद्रोह में शामिल हो गए।

14 जनजाति आंदोलन

मोतीलाल तेजावत किस गाँव के निवासी थे?
II Grade (S-1) - 29.1.2023

(a) फलासिया (b) सामलिया
(c) कोल्यारी (d) मानगढ़

उत्तर (c) व्याख्या:-
मोतीलाल तेजावत
- **जन्म -** कोल्यारी (उदयपुर), 1886 ई.
- **जाति –** ओसवाल (जैन बनिया)
- **पिता –** नंदलाल ओसवाल
- **माता –** केसर बाई
- **पत्नी –** लेहरो देवी
- **उपनाम -** आदिवासियों का मसीहा, बावजी, अवतारी पुरूष व गांधी का दूत।
- **व्यवसाय -** झाड़ोल ठिकाने में 'कामदार'
- **गतिविधियों का केंद्र –** झाड़ोल (उदयपुर)
- **नारा –** हाकिम और हुकुम नहीं।
- **राजनीतिक करियर -** लोकसभा सदस्य (उदयपुर व चित्तौड़गढ़) व अध्यक्ष, राजस्थान खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड।

मेवाड़ राज्य के भील किसे अवतारी पुरुष मानते थे?
[PTI & Librarian Exam – 03.05.2025]

(a) विजय सिंह पथिक (b) गोविन्द गुरु
(c) मोतीलाल तेजावत (d) रामनारायण चौधरी

उत्तर (c) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

एकी आन्दोलन प्रारम्भ करने के पहले मोतीलाल तेजावत किस राजपूत ठिकाने में कामदार के पद पर कार्यरत थे?
RAS 2023

(a) सलूम्बर (b) झाड़ोल
(c) देवगढ़ (d) कोठारिया

उत्तर (b) व्याख्या:-
- एकी आन्दोलन प्रारम्भ करने के पहले मोतीलाल तेजावत झाड़ोल (उदयपुर) ठिकाने में कामदार थे।
- कालान्तर में यह परचून का व्यवसाय करने लगे।
- मोतीलाल तेजावत पोसीना ठिकाने में सामलिया नामक स्थान पर चित्रे-विचित्रे मेले में नियमित रूप से अपनी दुकान लगाते थे।

मोतीलाल तेजावत ..... ठिकाने में कामदार थे।
II Grade (Sans.) -12.02.2023 (S-II)

(a) झाड़ोल (b) बान्सी
(c) सलूम्बर (d) बिजोलिया

उत्तर (a) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान में 'एकी' आन्दोलन का सूत्रपात किसने किया?
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल- 14.05.2022

(a) विजयसिंह पथिक (b) मोतीलाल तेजावत
(c) गोविन्द गिरि (d) गोपालसिंह 'खरवा'

उत्तर (b) व्याख्या:-
- असहयोग आन्दोलन व बिजौलिया किसान आन्दोलन से प्रेरित होकर उदयपुर के भोमट क्षेत्र की भील व गरासिया जनजातियों द्वारा एकी आन्दोलन / भोमट भील आन्दोलन प्रारंभ किया।
- मोतीलाल तेजावत ने 1921 ई. में वैशाख पूर्णिमा के दिन मातृकुण्डिया नामक स्थान से एकी आन्दोलन का विधिवत प्रारंभ किया।
- एकी आन्दोलन का प्रमुख उद्धेश्य किसानों को भारी लगान और अन्यायपूर्ण बेगार से मुक्त करवाना था।
- एकी आन्दोलन के प्रमुख केन्द्र उदयपुर व सिरोही थे।

राजस्थान में एकी आंदोलन का प्रारंभ किसने किया?
BSTC 2023

(a) भोगीलाल पांड्या (b) कन्हैयालाल सेठिया
(c) मोतीलाल तेजावत (d) जमनालाल बजाज

उत्तर (c) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

एकी आन्दोलन की शुरुआत 1921 ई. मोतीलाल तेजावत ने कहाँ से शुरू की थी?
JEN (Mechanical) Degree-20 05.2022

(a) देवलिया (b) सांवलिया
(c) मण्डफिया (d) मातृकुण्डिया

उत्तर (d) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'एकी आन्दोलन' का प्रमुख उद्देश्य क्या था-
[खाद्य सुरक्षा अधिकारी-25.11.2019]

(a) भीलों में व्याप्त बुराईयों को दूर करना।
(b) किसानों को भारी लगान और अन्यायपूर्ण बेगार से मुक्त करवाना।
(c) भीलों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त करवाना।
(d) भील राज्य की स्थापना करने के लिए भीलों एवं गरासियों का एक संगठन बनाना।

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

एकी आंदोलन के क्या उद्देश्य थे?
[Librarian 2nd Grade Exam – 16.02.2025]
(अ) राज्य व जागीरदारों द्वारा भीलों के किसी भी प्रकार के शोषण का विरोध।
(ब) राज्य व जागीर की कचहरियों (न्यायालयों) का बहिष्कार।
(स) भीलों व गरासियों का सामाजिक उत्थान।
सही उत्तर चुनिए -
(a) (अ) और (ब) सही हैं
(b) (ब) और (स) सही हैं
(c) (अ) और (स) सही हैं
(d) सभी सही हैं

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मेवाड़ के महाराणा के समक्ष मोतीलाल तेजावत द्वारा भीलों की 21 सूत्री माँग को किस शीर्षक से प्रस्तुत किया गया?
2nd Grade GK : 07.09.2025

(a) भील सन्देश
(b) भोमट-री-बात
(c) एकी वचन
(d) मेवाड़ पुकार

उत्तर (d) व्याख्या:-
- मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह के समक्ष 21 सूत्रीय मांग पत्र रखा जिसे **'मेवाड़ की पुकार'** कहा जाता है।
- मेवाड़ महाराणा ने 21 में से 18 मांगे मान ली।
- निम्निलखित तीन मांगे नहीं मानी गई -
  1. वन सम्पदा, 2. बैठ-बेगार, 3. सूअरों से संबंधित

'मेवाड़ पुकार' –
Librarian III Grade 11.09.2022

(a) मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार इक्कीस सूत्रीय माँग पत्र था, जो महाराणा मेवाड़ को प्रस्तुत किया गया था।
(b) मेवाड़ प्रजामण्डल का साप्ताहिक अखबार था।
(c) केसरीसिंह चारहठ द्वारा रचित एक शौर्य गाथा थी।
(d) जयनारायण व्यास द्वारा संपादित मासिक पत्रिका थी।

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'मेवाड़ पुकार' नामक 21 सूत्रीय माँग-पत्र किसने तैयार किया था?
JEN (Mechanical) Degree-20.05.2022
CET: 08.01.2023 (S-II)
Patwar Main 24.12.16

(a) मोतीलाल तेजावत (b) विजय सिंह पथिक
(c) माणिक्यलाल वर्मा (d) साधु सीताराम दास

उत्तर (a) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से कौन 1921-1922 में मेवाड़ के भीलों के आदिवासी किसान आंदोलन के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक हैं?
[राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-15.07.2018 (11)]

(a) मोतीलाल तेजावत (b) रावत केसरी सिंह
(c) रावत जोधसिंह (d) हरलाल सिंह

उत्तर (a) व्याख्या:-
- मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ के आदिवासी किसान आन्दोलन 'एकी आन्दोलन' का नेतृत्व किया था।
- 07 मार्च 1922 ई. को नीमड़ा हत्याकांड हुआ था।
- इस हत्याकांड के दौरान मेजर सूटन द्वारा फायरिंग की गई जिसमें 1200 किसान शहीद हुए थे।
- मेवाड़ सरकार ने मोतीलाल तेजावत की गिरफ्तारी पर 500 रूपए का ईनाम रखा था।

जुलाई 1921 में मोतीलाल तेजावत ने किस स्थान से भील आन्दोलन छेड़ा?
Lab Assistent (Science) - 29.06.2022

(a) झाड़ोल (b) गोगुन्दा
(c) कोटड़ा (d) सिरोही

15 किसान आंदोलन

राजस्थान कृषक आन्दोलन का प्रारंभ सर्वप्रथम कहाँ हुआ?

कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा- 03.03.2019
PSI (मोटर वाहन)-2022, पशुधन सहायक-2018

(a) बेगूं (b) दूधवा - खारा
(c) बिजोलिया (d) सिरोही

उत्तर (c) व्याख्या:-
- राजस्थान में कृषक आंदोलन का सर्वप्रथम प्रारंभ मेवाड़ रियासत के बिजौलिया क्षेत्र से हुआ था।
- बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान का पहला संगठित किसान आंदोलन माना जाता है।
- यह विश्व का सबसे लम्बा (44 वर्ष) व अहिंसक किसान आंदोलन माना जाता है।
- बिजौलिया किसान आंदोलन रूस की बोल्शेविक क्रांति से प्रभावित था।
- इस आंदोलन की शुरूआत साधु सीताराम दास के नेतृत्व में हुई थी।
- बिजौलिया किसान आंदोलन का प्रमुख केंद्र उमाजी का खेडा था। यहां से विजयसिंह पथिक आंदोलन का संचालन करते थे।
- बिजौलिया के किसान एक-दूसरे को 'कॉमरेड' कहकर सम्बोधित करते थे।
- यहाँ के किसान विजयसिंह पथिक को 'महात्मा जी' कहकर पुकारते थे।
- मुंशी प्रेमचंद का रंगभूमि उपन्यास बिजौलिया किसान आंदोलन पर आधारित है।
- शंकर सहाय सक्सेना की पुस्तक 'बिजौलिया किसान आंदोलन का इतिहास' से इस आंदोलन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

बिजोलिया ठिकाने का संस्थापक कौन था?

कृषि अधिकारी (कृषि विभाग) 19.1.2021
C.I.D.-2002

(a) राव केशवदास (b) अशोक परमार
(c) राव गोविन्ददास (d) ठाकुर कृष्णसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
- बिजौलिया ठिकाने का संस्थापक अशोक परमार था।
- महाराणा सांगा ने अशोक परमार (जगनेर, भरतपुर) को ऊपरमाल की जागीर प्रदान की थी।

1890 के दौर में बिजोलिया में जागीरदार कौन थे?

[उद्योग प्रसार अधिकारी-22.08.2018]

(a) परमार (b) राणावत
(c) शक्तावत (d) चौहान

उत्तर (a) व्याख्या:-
- बिजौलिया में परमार वंश का शासन था।
- बिजौलिया मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।
- वर्तमान में यह राजस्थान के भीलवाडा जिले में स्थित है।

अशोक परमार को ऊपरमाल की जागीर किससे प्राप्त हुई-

[महिला पर्यवेक्षक परीक्षा (Non-TSP) 29.11.2015]

(a) महाराणा कुम्भा (b) महाराणा सांगा
(c) राव केशवदास (d) महाराणा शम्भूसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
- महाराणा सांगा ने अशोक परमार को ऊपरमाल की जागीर प्रदान की थी।
- अशोक परमार ने खानवा के युद्ध (1527 ई.) में भाग लिया था।
- अशोक परमार ने मांडलगढ (भीलवाडा) में सांगा की 8 खंभों की छतरी का निर्माण करवाया था।

बिजोलिया आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था-

PTI (Grade-11)-30.04.2023

(a) पृथ्वीसिंह के समय 1878 में
(b) केशवदास के समय 1867 में
(c) सवाई कृष्णसिंह के समय 1897 में
(d) जगतसिंह के समय 1687 में

उत्तर (c) व्याख्या:-
- बिजौलिया किसान आंदोलन राव कृष्ण सिंह के समय 1897 ई. में गिरधरपुरा नामक स्थान से धाकड़ जाति के किसानों द्वारा प्रारंभ किया गया था।

बिजोलिया किसान आंदोलन किस संस्था के द्वारा चलाया गया था?

TECHNICAL ASST. EXAM - 07.07.2025

(a) राजस्थान किसान सभा
(b) राजस्थान सेवा संघ
(c) सर्व हित करणी सभा
(d) मारवाड़ लोक परिषद्

उत्तर (b) व्याख्या:-
- राजस्थान सेवा संघ ने बिजौलिया किसान आंदोलन को सहयोग, समर्थन व नेतृत्व प्रदान किया था।
- विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी व हरिभाई किंकर ने गांधी जी की सलाह पर किसान आंदोलनों को सहयोग प्रदान करने के लिए 1919 ई. में वर्धा (महाराष्ट्र) में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की थी।
- इस संगठन ने राजस्थान में हुए विभिन्न किसान आंदोलनों जैसे बिजौलिया, बेगूं, बूँदी, एकी व शेखावाटी किसान आंदोलन को सहयोग प्रदान किया था।

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान में कब प्रारंभ हुआ?
पटवार द्वितीय पारी 17 अगस्त 2025

(a) 1890 (b) 1897
(c) 1892 (d) 1895

उत्तर (b) व्याख्या:-
- 1897 ई. में गिरधारीपुरा नामक स्थान से धाकड़ जाति के किसानों द्वारा निम्नलिखित कारणों से यह आंदोलन प्रारंभ किया गया-

1. 84 प्रकार के कर 2. अधिक भू-राजस्व
3. लांटा-कूंता 4. बेगार प्रथा
5. चंवरी कर 6. तलवार बंधाई कर

राजस्थान में बिजोलिया किसान आंदोलन कब प्रारंभ हुआ था?
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-14.05.2022

(a) 1897 (b) 1854
(c) 1853 (d) 1899

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

1897 ई. में बिजोलिया के किसानों ने (जो गिरधारीपुरा गाँव में एकत्रित थे) निम्न में से किन्हें महाराणा से मिलने के लिए उदयपुर भेजा?
रसायनज्ञ परीक्षा-06.08.2024

(a) हीरालाल और तेजसिंह
(b) नानजी पटेल और ठाकरी पटेल
(c) सीतारामदास और हीरालाल
(d) ब्रह्मदेव और फतहकरण चारण

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ साधु सीताराम दास की सलाह पर किसानों ने **नानजी पटेल व ठाकरी पटेल** को उनकी समस्याओं से अवगत करवाने हेतु मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह के पास उदयपुर भेजा।
➢ महाराणा ने इन शिकायतों की जाँच हेतु **हामिद हुसैन** नामक अधिकारी को भेजा, जिसने शिकायतों को सही बताया लेकिन महाराणा ने इस पर कोई कार्यवाही नहीं की।
➢ इस सन्दर्भ में कृष्णसिंह को जानकारी मिलने पर उसने नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

बिजोलिया किसान आन्दोलन में किस जाति के किसान सर्वाधिक संख्या में थे?
[II Gr (Urdu). 2011]

(a) सिखी (b) मनसा
(c) मेव (d) धाकड़

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

बिजोलिया आंदोलन चरणबद्ध तरीके से हुआ था। उस विकल्प का चयन कीजिए जो इन चरणों में से नहीं है?
राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-13.05.2022 (a)

(a) 1897 से 1915 (b) 1916 से 1922
(c) 1923 से 1941 (d) 1888 से 1896

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ **बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में सम्पन्न हुआ, जो निम्नलिखित है-**
1. प्रथम चरण - 1897 से 1915 ई. तक
2. द्वितीय चरण - 1915 से 1923 ई. तक
3. तृतीय चरण - 1923 से 1941 ई. तक

सन् 1903 में किसने अपने जागीर क्षेत्र में 'चँवरी' कर लगाया, जिसे प्रत्येक को अपनी पुत्री का विवाह के समय देना अपेक्षित था?
LDC-11.08.2024

(a) राव केसरीसिंह (b) राव कृष्णसिंह
(c) राव पृथ्वीसिंह (d) राव जोधसिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ राव कृष्ण सिंह ने 1903 ई. में लड़कियों के विवाह पर पाँच रूपये चंवरी कर लगाया था।

किसानों पर "चंवरी कर" किसने अधिरोपित किया था?
लिपिक ग्रेड-II (LDC) परीक्षा – 2023

(a) पृथ्वी सिंह (b) राव कृष्णसिंह
(c) गंगाराम (d) हामिद हुसैन

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16 प्रजामण्डल आंदोलन

राजस्थान के प्रमुख प्रजामण्डल				
प्रजामंडल	**स्थापना वर्ष**	**संस्थापक**	**प्रथम अध्यक्ष**	**अन्य सदस्य**
जयपुर	1931 ई.	जमनालाल बजाज व कर्पूरचंद पाटनी	कर्पूरचंद पाटनी	हीरालाल शास्त्री, देवीशंकर तिवारी, टीकाराम पालीवाल, बाबा हरिश्चंद्र, दौलतमल भंडारी, रामकरण जोशी, हंस डी राय, गुलाबचंद कासलीवाल, चिरंजीलाल मिश्र व चिरंजीलाल अग्रवाल
बूँदी	1931 ई.	कान्तिलाल	कान्तिलाल	नित्यानंद नागर, ऋषिदत्त मेहता, गोपाल कोटिया, गोपाललाल जोशी, पूनमचंद्र व मोतीलाल अग्रवाल
मारवाड़	1934 ई.	जयनारायण व्यास	भंवरलाल सर्राफ	अभयमल मेहता, पुरूषोत्तमदास नैय्यर, छगनराज चौपासनीवाला, आनंदराज सुराणा, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, द्वारकादास पुरोहित, मथुरादास माथुर व गणेशीलाल व्यास उस्ताद
हाड़ौती	1934 ई.	पं. नयनूराम शर्मा	हाजी फैज मोहम्मद	-
बीकानेर	1936 ई.	मघाराम वैद्य	मघाराम वैद्य	बाबू मुक्ताप्रसाद, भिक्षालाल बोहरा, लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, कुंभाराम आर्य व चौधरी हरदत्तसिंह
धौलपुर	1936 ई.	कृष्णदत्त पालीवाल	कृष्णदत्त पालीवाल	ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु, जौहरीलाल इंदु, यमुनाप्रसाद व मूलचंद
मेवाड़	1938 ई.	माणिक्यलाल वर्मा	बलवंत सिंह मेहता	भूरेलाल बयां, मोहनलाल सुखाडिया, हीरालाल कोठारी, रमेशचंद्र व्यास, प्यारचंद विश्नोई, दयाशंकर श्रोत्रिय, परसराम त्रिवेदी, भवानीशंकर वैद्य व जमनालाल वैद्य
शाहपुरा	1938 ई.	रमेशचंद्र औझा	अभयसिंह डांगी	लादूराम व्यास व लक्ष्मीनारायण कटिया
अलवर	1938 ई.	पं. हरिनारायण शर्मा	पं. हरिनारायण शर्मा	कुंजबिहारी लाल मोदी व लक्ष्मण स्वरूप पाठक
भरतपुर	1938 ई.	किशनलाल जोशी	गोपीलाल यादव	ठाकुर देशराज, जुगलकिशोर चतुर्वेदी, रेवतीशरण उपाध्याय, मास्टर आदित्येन्द्र व मास्टर फकीरचंद
करौली	1938 ई.	मुंशी त्रिलोकचंद माथुर	त्रिलोकचंद माथुर	चिरंजीलाल शर्मा, मानसिंह व कुंवर मदन सिंह
कोटा	1939 ई.	पं. नयनूराम शर्मा	पं. नयनूराम शर्मा	अभिन्न हरि, तनसुख लाल मित्तल, शंभुदयाल सक्सेना, मोतीलाल व बेनीमाधव प्रसाद
किशनगढ़	1939 ई.	कांतिचंद्र चौथानी	जमाल शाह	-
सिरोही	1939 ई.	गोकुलभाई भट्ट	गोकुलभाई भट्ट	धर्मचंद सुराणा, धनराज, कुशलचंद, ताराचंद, समर्थमल, वृद्धिशंकर, चुन्नीलाल टेवटा, घासीलाल चौधरी, पूनमचंद, जीवनमल व भीमशंकर शर्मा
कुशलगढ़	1942 ई.	भंवरलाल निगम	भंवरलाल निगम	वर्धमान गादिया, दाड़मचंद जोशी व पन्नालाल त्रिवेदी
बॉसवाड़ा	1943 ई.	भूपेंद्रनाथ त्रिवेदी	विनोदचंद्र जोशी	विनोदचंद्र जोशी, मणिशंकर नागर, धूलजी भाई भावसार, दीपा भगत, कुबला भगत, देवा मच्छार, हेमता भगत, सिद्धिशंकर, मोतीलाल व चिमनलाल मालोत
डूंगरपुर	1944 ई.	भोगीलाल पांड्या	भोगीलाल पांड्या	हरिदेव जोशी, गौरीशंकर उपाध्याय, खुशीचंद जैन, भीखाभाई भील, शिवलाल कोटडिया
प्रतापगढ़	1945 ई.	अमृतलाल पाठक व चुन्नीलाल प्रभाकर	अमृतलाल पाठक	माणिक्यलाल शाह
जैसलमेर	1945 ई.	मीठालाल व्यास	मीठालाल व्यास	सागरमल गोपा, शिवशंकर गोपा, लालचंद जोशी व जीवनलाल
झालावाड़	1946 ई.	मांगीलाल भव्य	मांगीलाल भव्य	मकबूल आलम, कन्हैयालाल मित्तल, रतनलाल व मदनगोपाल

निम्नांकित में से प्रजामण्डलों का मुख्य उद्देश्य था-
[Stenographer Exam: 30.05.2013]
(a) शासकों की सत्ता समाप्त करना
(b) ब्रिटिश राज्य का अन्त
(c) नागरिकों के अधिकारों के लिये संघर्ष
(d) कुरीतियाँ मिटाना

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ प्रजामण्डलों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य उत्तरदायी शासन की स्थापना करना व नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस अधिवेशन में देशी रियासतों के स्वतंत्रता आंदोलन को अपने अंग के रूप में अपनाया-
[RPSC II Grade Teacher-2010]
(a) अमृतसर (b) नागपुर
(c) हरिपुरा (d) लखनऊ

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (1938 ई.) में प्रजामण्डल आन्दोलन को समर्थन प्रदान किया था।
➢ हरिपुरा अधिवेशन का आयोजन सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में हुआ था।

राजस्थान का प्रथम प्रजामण्डल था?
[छात्रा. अधी. 2008]
[सूचना सहायक परीक्षा-2013]
(a) जयपुर (b) मारवाड़
(c) मेवाड़ (d) भरतपुर

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ राजस्थान का प्रथम प्रजामण्डल – जयपुर (1931 ई.)
➢ राजस्थान का अंतिम प्रजामण्डल – झालावाड़ (1946 ई.)
➢ राजस्थान की टोंक रियासत में प्रजामण्डल की स्थापना नहीं हुई थी।

जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना ..... में ..... के द्वारा की गई थी-
[पशु परिचर-3.12.2024 (S-II)]
(a) नयनूराम एवं माणिक्यलाल वर्मा द्वारा 1931 में
(b) जमनालाल बजाज एवं गंगा सिंह द्वारा 1930 में
(c) कर्पूर चन्द पाटनी एवं महात्मा गाँधी द्वारा 1931 में
(d) जमनालाल बजाज व कर्पूरचन्द पाटनी द्वारा 1931 में

उत्तर (d) व्याख्या:-
जयपुर प्रजामण्डल – (1931 ई.)
➢ **संस्थापक –** जमनालाल बजाज व कर्पूरचंद पाटनी
➢ **प्रथम अध्यक्ष –** कर्पूरचंद पाटनी
➢ **पुर्नगठन (1936 ई.)** – जमनालाल बजाज द्वारा
➢ **प्रथम अधिवेशन –** 08-09 मई 1938 ई. को जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में नथमल का कटला (जयपुर) नामक स्थान पर।
➢ प्रथम अधिवेशन के प्रचार-प्रसार के लिए बजाज ने 'सालाना जलसों की धूम' नामक पर्चे प्रकाशित किए।

1938 में जयपुर प्रजा मण्डल के अध्यक्ष कौन थे?
[ASO-25.8.2024]
(a) भंवर लाल सर्राफ (b) बलवंत सिंह मेहता
(c) जमनालाल बजाज (d) जी.डी. बिड़ला

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ 1938 ई. में जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाज थे।
➢ 10 मई 1938 ई. को कस्तूरबा गांधी ने जयपुर में महिलाओं की एक सभा को संबोधित किया था।
➢ 30 मई 1938 ई. को प्रजामण्डल को प्रतिबंधित कर दिया गया। अत: आगरा में प्रजामण्डल का अस्थाई मुख्यालय स्थापित किया गया।
➢ 01 फरवरी 1939 ई. को जयपुर प्रजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारंभ किया।
➢ रमा देवी देशपांडे के नेतृत्व में महिलाओं ने भी सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया था।
➢ जमनालाल बजाज ने जयपुर प्रजामण्डल को मान्यता दिलाने के लिए 1939 ई. में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया।
➢ 02 अप्रैल 1940 ई. को जयपुर प्रजामण्डल का पंजीकरण हुआ।

जयपुर प्रजामण्डल को वैधानिक मान्यता दिलाने के लिए फरवरी, 1939 में किसके नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया था?
[2nd Grade (GK) Shift-I Exam - 07.09.2025]
(a) गुलाब चन्द चौधरी
(b) जमनालाल बजाज
(c) कुन्दन लाल
(d) राजकुमार हरदयाल

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17 जन-जाग्रति (प्रमुख संस्थाएँ)

निम्न में से किस व्यक्ति ने सर्वप्रथम 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना?
PSI-13.09.2021

(a) राजा राममोहन राय
(b) स्वामी विवेकानन्द
(c) स्वामी दयानन्द सरस्वती
(d) बाल गंगाधर तिलक

उत्तर (c) व्याख्या:-
स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-83 ई.)
- स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 ई. को गुजरात की मोरवी रियासत के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था।
- इनका बचपन का नाम मूलशंकर था।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय समाज के महान चिंतक, धार्मिक सुधारक और वैदिक विचारधारा के समर्थक थे।
- उनके चिंतन और कार्य का मूल आधार **स्वधर्म**, **स्वराज**, **स्वदेशी**, और **स्वभाषा था**।

उस संस्था का नाम बताइये जिसका गठन स्वामी दयानंद सरस्वती ने उदयपुर में किया था, लेकिन कालान्तर में यह अजमेर स्थानान्तरित कर दी गई-
III Grade (Punjabi) -28.02.2023

(a) आर्य समाज
(b) इजलास सभा
(c) परोपकारिणी सभा
(d) महान्द्राज सभा

उत्तर (c) व्याख्या:-
- फरवरी 1883 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने राजस्थान के उदयपुर में **परोपकारिणी सभा** की स्थापना की। कुछ समय बाद इस सभा का **मुख्यालय अजमेर स्थानांतरित** कर दिया गया।
- इस सभा के अध्यक्ष के रूप में **महाराणा सज्जनसिंह** को नियुक्त किया गया था।

उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' कब पंजीकृत की गयी?
JEN (Agri.) - 10.09.2022

(a) फरवरी, 1883 (b) फरवरी, 1881
(c) 10 अप्रैल, 1875 (d) अक्टूबर, 1883

उत्तर (a) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

स्वामी दयानंद सरस्वती पहली बार 1865 ई. में ..... के राजकीय अतिथि के रूप में राजस्थान आए थे?
कनिष्ठ अनुदेशक-10.09.2022

(a) जयपुर
(b) जैसलमेर
(c) उदयपुर
(d) करौली

उत्तर (d) व्याख्या:-
- दयानंद सरस्वती **पहली बार 1865 में महाराजा मदनपाल के आग्रह पर करौली** के राजकीय अतिथि के रूप में राजस्थान आए थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती राजस्थान में दूसरी बार 1881 ई. में भरतपुर आए थे।
- 1881 ई. में दयानंद सरस्वती के चित्तौड़गढ आगमन पर कविराज श्यामलदास ने उनका स्वागत किया।
- मेवाड़ महाराणा सज्जन सिंह के अनुरोध पर 1882 ई. में स्वामी जी उदयपुर आए थे।
- इन्होनें उदयपुर के गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे संस्करण की भूमिका लिखी थी।
- दयानंद सरस्वती ने 1881 ई. में अजमेर में आर्य समाज व जयपुर में वैदिक धर्म सभा की स्थापना की थी।

सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना के लिए स्वामी दयानन्द ने राजस्थान की पहली यात्रा कब की?
[JEN (Diploma) Exam- 21.08.2016]

(a) मई, 1866
(b) जुलाई, 1872
(c) जून, 1865
(d) सितम्बर, 1869

उत्तर (c) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

चांदकरण शारदा और हरबिलास शारदा राजस्थान में किस संस्था से संबंधित थे?
2nd Grade Re-Exam : 30.07.2023

(a) सम्प सभा
(b) आर्य समाज
(c) इंडियन एसोसियेशन
(d) महाजन सभा

उत्तर (b) व्याख्या:-
- अजमेर के चांदकरण शारदा और हरविलास शारदा आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता थे।
- भरतपुर में जुगलकिशोर चतुर्वेदी व मास्टर आदित्येन्द्र आर्य समाज के कार्यकर्ता थे।
- मेवाड़ में विष्णुलाल पांड्या तथा अलवर में वासुदेव खंडेलवाल ने आर्य समाज की स्थापना की थी।
- शेखावाटी में आर्य समाज की स्थापना देवीबख्श सर्राफ ने मंडावा (झुँझनूं) में की थी।

मेवाड़ में 'आर्य समाज' की स्थापना किसने की?
[JEN (Diploma) Exam- 21.08.2016]
(a) विष्णुलाल पाँड्या (b) राधाकिशन शर्मा
(c) गोपीनाथ शर्मा (d) कन्हैया लाल जादम

उत्तर (a) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा स्थापित मुद्रणालय का नाम क्या था?
राज. पु. - 13.5.2022 (S-II)
(a) वैदिक प्रेस (b) वैदिक यंत्रालय
(c) वैदिक मुद्रणालय (d) आर्य मुद्रणालय

उत्तर (b) व्याख्या:-
- अजमेर में **'वैदिक यंत्रालय'** नामक मुद्रणालय की स्थापना महर्षि स्वामी **दयानंद सरस्वती ने 1880** में की थी।
- इस यंत्रालय की स्थापना का उद्देश्य उनके द्वारा लिखित ग्रंथों और वैदिक साहित्य को स्वयं प्रकाशित करना था।
- 1889 ई. में वैदिक यंत्रालय (अजमेर) से सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन हुआ था।
- सज्जन यंत्रालय नामक प्रिंटिंग प्रेस उदयपुर में स्थित है। जिसकी स्थापना महाराणा सज्जन सिंह द्वारा की गई थी।

'वैदिक यंत्रालय' प्रिंटिंग प्रेस कहाँ स्थापित की गई है-
[कृषि अधिकारी 19.1.2021]
(a) उदयपुर (b) अजमेर
(c) बीकानेर (d) जयपुर

उत्तर (b) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' को कहाँ लिखा था-
[Head Master-11.10.2021]
(a) अलवर (b) जोधपुर
(c) अजमेर (d) उदयपुर

उत्तर (d) व्याख्या:-
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने उदयपुर के गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे संस्करण की भूमिका लिखी थी।
- सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन अजमेर से हुआ था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन कहाँ हुआ-
[RPSC-1 Grade - 2015]
(a) अजमेर (b) जोधपुर
(c) उदयपुर (d) जयपुर

उत्तर (a) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण कहाँ हुआ?
[CET - 5.2.2023 (S-II)]
(a) टंकारा (b) मुंबई
(c) जोधपुर (d) अजमेर

उत्तर (d) व्याख्या:-
- स्वामी दयानंद सरस्वती का निर्वाण 30 अक्टूबर 1883 ई. को दीपावली के दिन अजमेर में हुआ था।
- जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की प्रेमिका नन्हीं जान ने गौड़ मिश्र नामक रसोइये की सहायता से दयानंद सरस्वती की जहर देकर हत्या कर दी थी।

उदयपुर में देश हितैषिणी सभा का गठन किसने किया?
सांख्यिकी अधिकारी - 25.02.2024
(a) महाराणा शम्भू सिंह (b) महाराणा सज्जन सिंह
(c) महाराणा अजीत सिंह (d) महाराणा जसवंत सिंह

उत्तर (b) व्याख्या:-
- 02 जुलाई, 1877 ई. को **महाराणा सज्जनसिंह** की अध्यक्षता में उदयपुर में 'देश हितैषिणी सभा' का गठन किया गया।
- यह किसी भी रियासत में समाज सुधार का पहला संगठनात्मक प्रयास था।
- देश हितैषिणी सभा का प्रमुख उद्देश्य समाज सुधार तथा विवाह से संबंधित समस्याओं का समाधान करना था।

राजपूताना में समाज सुधार के उद्देश्य से 'देश हितैषिणी सभा' की स्थापना कहाँ की गई थी?
बीएसटीसी परीक्षा-2025 (द्वितीय पारी))
(a) जयपुर (b) अजमेर
(c) जोधपुर (d) उदयपुर

उत्तर (d) व्याख्या:-
- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18 राजनीतिक चेतना (समाचार पत्र)

समाचार पत्र 'मजहरूल सरूर' कहाँ से और कब प्रकाशित हुआ?

RAS- 27.10.2021

(a) भरतपुर, 1849 (b) जयपुर, 1856
(c) अजमेर, 1840 (d) उदयपुर, 1879

उत्तर (a) व्याख्या:-

- 'मजहरुल सरूर' राजपूताना का प्रथम समाचार-पत्र था।
- 1849 ई. में **भरतपुर** से इस समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।
- राजस्थान में पत्रकारिता की शरूआत भरतपुर क्षेत्र से हुई थी।
- राजस्थान में स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय अजमेर शहर पत्रकारिता का प्रमुख केन्द्र था।

राजस्थान में प्रकाशित सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार - पत्र था?

[RPSC III Grade Teacher Exam-2006]

(a) राजस्थान समाचार
(b) सज्जन कीर्ति सुधाकर
(c) तरुण राजस्थान
(d) राजपूताना गजेटियर

उत्तर (b) व्याख्या:-

- राजस्थान में प्रकाशित सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र सज्जन कीर्ति सुधाकर (1879 ई.) था।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के कहने पर मेवाड़ महाराणा सज्जन सिंह ने उदयपुर से इस साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।
- सज्जन कीर्ति सुधाकर को मेवाड़ / उदयपुर का गजट कहा जाता है।
- यह मेवाड़ का प्रशासनिक समाचार पत्र था।

मुंशी समर्थदास चारण द्वारा अजमेर से 1889 में प्रारम्भ समाचार पत्र का क्या नाम था?

Asstt. Agriculture Officer Exam-31.05.2019

(a) तरुण राजस्थान (b) नवीन राजस्थान
(c) राजस्थान केसरी (d) राजस्थान समाचार

उत्तर (d) व्याख्या:-

- मुंशी समर्थदान चारण ने **1889 में अजमेर से 'राजस्थान समाचार'** नामक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया था।
- यह राजस्थान का पहला दैनिक हिंदी समाचार पत्र था।

'राजस्थान केसरी' समाचार पत्र का प्रकाशन किसने प्रारम्भ किया?

House Keeper-09.07.2022

(a) विजय सिंह पथिक (b) हरिभाऊ उपाध्याय
(c) केसरी सिंह बारहठ (d) अर्जुन लाल सेठी

उत्तर (a) व्याख्या:-

राजस्थान केसरी –

- राजस्थान सेवा संघ ने वर्धा (महाराष्ट्र) से 1920 ई. में राजस्थान केसरी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।
- राजस्थान केसरी के सम्पादक विजयसिंह पथिक तथा सहायक सम्पादक रामनारायण चौधरी व ईश्वरदान आसिया थे।
- जमनालाल बजाज ने इस समाचार पत्र को आर्थिक सहायता प्रदान की थी।
- हरिभाई किंकर व कन्हैयालाल कलंत्री इस समाचार पत्र के व्यवस्थापक थे।
- केसरी सिंह बारहठ के नाम पर इस समाचार पत्र का नाम राजस्थान केसरी रखा गया।
- इस समाचार पत्र में बिजौलिया किसान आंदोलन की खबरें प्रकाशित होती थी।
- विजयसिंह पथिक के अजमेर आ जाने पर सत्यदेव विद्यालंकार ने इस समाचार पत्र का सम्पादन किया था।

किस समाचार पत्र के साथ विजयसिंह पथिक का नाम जुड़ा हुआ है?

स्कूल व्याख्याता-06.01.2020
उद्योग-प्रसार अधिकारी-22.08.2018

(a) राजस्थान केसरी (b) राजपूताना गजट
(c) राजस्थान समाचार (d) मेवाड़ समाचार

उत्तर (a) व्याख्या:-

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से कौन-सा समाचार-पत्र 1920 में विजय सिंह पथिक ने वर्धा से प्रकाशित किया था?

[राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल-15.07.2018 (II)]

(a) नवीन राजस्थान
(b) तरुण राजस्थान
(c) राजस्थान केसरी
(d) नवजीवन

उत्तर (c) व्याख्या:-

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्नलिखित में से किस स्थान से राजस्थान के लोगों ने प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र राजस्थान केसरी का प्रकाशन किया?

[PTI & Librarian Exam – 03.05.2025]

(a) वर्धा (b) अजमेर
(c) ब्यावर (d) उदयपुर

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

विजयसिंह पथिक ने 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन प्रथमतया कहाँ से प्रारंभ किया?

[वनपाल-06.11.2022(S-II)]

(a) वर्धा (b) अजमेर
(c) जोधपुर (d) सिरोही

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'नवीन राजस्थान' नामक समाचार पत्र के संस्थापक कौन थे?

[II Grade (Hindi & Social Study) Exam. 2011]

(a) अर्जुनलाल सेठी (b) माणिक्यलाल वर्मा
(c) विजयसिंह पथिक (d) गोपालसिंह खरवा

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ राजस्थान सेवा संघ ने 1922 ई. में अजमेर से नवीन राजस्थान नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।
➢ नवीन राजस्थान समाचार पत्र के सम्पादक विजयसिंह पथिक व किशोरसिंह वर्मा थे।
➢ इस समाचार पत्र में बिजौलिया, बेगूं, एकी व बरड़ / बूँदी किसान आंदोलनों की खबरें प्रकाशित होती थी।
➢ नवीन राजस्थान समाचार पत्र का आदर्श वाक्य 'यश वैभव की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन न रहे, यदि इच्छा है तो यह है, जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।' था।
➢ 1923 ई. में नवीन राजस्थान समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अत: इसे तरूण राजस्थान नाम से पुन: प्रकाशित किया गया।

'यश वैभव की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन न रहे, यदि इच्छा है तो यह है, जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।' आदर्श-वाक्य था-

PRO-22.10.2019

(a) नवीन राजस्थान (b) राजस्थान केसरी
(c) नवजीवन (d) तरुण राजस्थान

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'नवीन राजस्थान' नामक समाचार पत्र बंद होने के पश्चात् पुनः किस नाम से प्रकाशित हुआ?

ARO-28.08.2022
कृषि अधिकारी (कृषि विभाग)-19.01.2021
II Grade (Sans.) -12.02.2023 (S-II)

(a) प्रताप (b) राजस्थान केसरी
(c) तरुण राजस्थान (d) राजस्थान

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'नवीन राजस्थान' समाचार-पत्र का प्रथम प्रकाशन किस वर्ष में हुआ?

2nd Grade GK : 08.09.2025

(a) 1921 ई. (b) 1922 ई.
(c) 1923 ई. (d) 1924 ई.

उत्तर (b) व्याख्या-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'तरुण राजस्थान' समाचार-पत्र के व्यवस्थापक थे?

II Grade (Maths) Exam 2011

(a) जयनारायण व्यास (b) अर्जुनलाल सेठी
(c) माणिक्यलाल कोठारी (d) सागरमल

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ राजस्थान सेवा संघ द्वारा 1923 ई. में अजमेर से तरूण राजस्थान समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया गया।
➢ तरूण राजस्थान समाचार पत्र के सम्पादक रामनारायण चौधरी व शोभालाल गुप्त थे।
➢ कुंवर मदन सिंह व पं. नयनूराम शर्मा इस समाचार पत्र के संवाददाता थे।
➢ इस समाचार पत्र में बूँदी किसान आंदोलन की खबरें प्रकाशित होती थी।
➢ तरूण राजस्थान समाचार पत्र ने 31 मई 1925 ई. को नीमूचणा हत्याकांड को सचित्र प्रकाशित किया था।
➢ कालांतर में जयनारायण व्यास तरूण राजस्थान समाचार पत्र के व्यवस्थापक बने तथा 1927 ई. में ब्यावर से इसे पुन: प्रकाशित किया।

'तरुण राजस्थान' समाचार पत्र किस संगठन से सम्बद्ध था?

मूल्यांकन अधिकारी-23.08.2020

(a) राजपूताना मध्य भारत सभा
(b) राजस्थान सेवा संघ
(c) वीर भारत सभा
(d) मारवाड़ यूथ लीग

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ **'तरुण राजस्थान' समाचार पत्र** राजस्थान सेवा संघ द्वारा प्रकाशित समाचार-पत्र था।

19 राजस्थान का एकीकरण

राजस्थान के एकीकरण पूर्व राजस्थान में कितनी 'रियासतें' और 'ठिकाने 'थे?

[राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल–14.06.2024 (II)]

(a) 16 रियासतें, 4 ठिकाने (b) 15 रियासतें, 6 ठिकाने
(c) 19 रियासतें, 3 ठिकाने (d) 20 रियासतें, 3 ठिकाने

उत्तर (c) व्याख्या:-

➢ आजादी से पूर्व राजपूताना तीन भागों में विभाजित था- रियासतें, ठिकाने (चीफशिप) एवं ब्रिटिश शासित प्रदेश।

➢ एकीकरण के समय राजस्थान में **19 देशी रियासतें, 3 ठिकाने व 1 केन्द्रशासित प्रदेश** था।

➢ राजस्थान का एकीकरण **7 चरणों में** पूर्ण हुआ।

➢ एकीकरण में **8 वर्ष, 7 माह व 14 दिन का समय** लगा।

भारत की स्वतंत्रता के बाद राजस्थान के गठन के कितने चरण थे-

[CET-5.2.2023 (S-1)]

(a) 5
(b) 7
(c) 9
(d) 11

उत्तर (b) व्याख्या:-

राजस्थान राज्य निर्माण
(18 मार्च 1948 से 01 नवम्बर 1956)

क्र.सं.	निर्मित संघ का नाम	निर्माण-तिथि	रियासत / ठिकाने जो संघ में शामिल हुए
1.	मत्स्य संघ	18 मार्च, 1948	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली व नीमराणा ठिकाना।
2.	राजस्थान संघ	25 मार्च, 1948	बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, टोंक, लावा व कुशलगढ ठिकाना।
3.	संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल, 1948	राजस्थान संघ + उदयपुर (मेवाड़)।
4.	वृहद् राजस्थान	30 मार्च, 1949	संयुक्त राजस्थान + बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर।
5.	संयुक्त वृहद् राजस्थान	10 अप्रैल, 1949	वृहद् राजस्थान + मत्स्य संघ
6.	राजस्थान	26 जनवरी, 1950	संयुक्त वृहद् राजस्थान + सिरोही (आबू व देलवाडा छोड़कर)।
7.	वर्तमान राजस्थान	1 नवम्बर, 1956	राजस्थान + अजमेर-मेरवाडा, टॉडगढ, आबू-देलवाड़ा एवं सुनेल टप्पा।

राजस्थान के राजनैतिक एकीकरण की प्रक्रिया में कुल कितना समय लगा?

[संरक्षण अधिकारी-29.5.2019]

(a) 7 वर्ष 8 माह 15 दिन
(b) 8 वर्ष 7 माह 14 दिन
(c) 5 वर्ष 8 माह 12 दिन
(d) 8 वर्ष 5 माह 15 दिन

उत्तर (b) व्याख्या:-

➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी रियासत कौन–सी थी?

[खाद्य सुरक्षा अधिकारी–25.11.2019]

(a) मेवाड़
(b) मारवाड़
(c) आमेर
(d) टोंक

उत्तर (b) व्याख्या:-

राजस्थान की रियासतों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य	
क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बडी रियासत	मारवाड़ (जोधपुर)
क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटी रियासत	शाहपुरा
जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बडी रियासत	जयपुर
जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटी रियासत	शाहपुरा
राजस्व की दृष्टि से सबसे बडी रियासत	जयपुर
राजस्व की दृष्टि से सबसे छोटी रियासत	शाहपुरा
राजस्थान की सबसे प्राचीनतम रियासत	मेवाड़
राजस्थान की सबसे नवीनतम रियासत	झालावाड़
राजस्थान की एकमात्र मुस्लिम रियासत	टोंक
राजस्थान की जाट रियासतें	भरतपुर-धौलपुर
राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन की स्थापना करने वाली रियासत	शाहपुरा
उत्तरदायी शासन की स्थापना नहीं करने वाली रियासतें	बीकानेर व जैसलमेर
राजस्थान में मराठों का प्रथम प्रवेश	बूँदी
मराठा आक्रमण से बची रहने वाली रियासतें	जैसलमेर व बीकानेर
राजस्थान एकीकरण पर प्रथम हस्ताक्षर करने वाली रियासत	अलवर
शिक्षा पर प्रतिबंध लगाने वाली रियासत	डुंगरपुर
एकमात्र रियासत जहां उत्तराधिकार शुल्क नहीं लिया जाता था	जैसलमेर

लावा, जिसे ब्रिटिश द्वारा 1867 में पृथक ठिकाने के रूप में मान्यता दी गई, पूर्व में किस राज्य का आश्रित ठिकाना था?

[Assistant Archivist–03.08 2024]

(a) बाँसवाड़ा (b) डूंगरपुर
(c) टोंक (d) अलवर

उत्तर (c) व्याख्या:–

- प्रारंभ में लावा टोंक रियासत का आश्रित ठिकाना था।
- ब्रिटिश सरकार द्वारा 1867 ई. में लावा को पृथक ठिकाने के रूप में मान्यता प्रदान की गई।
- एकीकरण के समय राजस्थान में तीन ठिकाने- लावा, कुशलगढ व नीमराणा थे।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बडा ठिकाना कुशलगढ जबकि सबसे छोटा ठिकाना लावा था।
- इन ठिकानों को ब्रिटिश सरकार द्वारा तोपों की सलामी नहीं दी जाती थी इस कारण इन्हें **'नॉन सैल्यूट स्टेट'** ठिकाने कहा जाता था।

आजादी से पूर्व नॉन सैल्यूट स्टेट ठिकाने कौनसे थे-

[JEN (Mech.) Degree (TSP) 16.10.2016]

(a) लावा (b) कुशलगढ़
(c) नीमराणा (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) व्याख्या:-

आजादी से पूर्व राजस्थान के चीफशिप / ठिकाने		
ठिकाना	**शासक**	**संबंधित रियासत**
लावा	वंसप्रदीप सिंह	टोंक
कुशलगढ	हरेन्द्र सिंह	बाँसवाडा
नीमराणा	राव राजेन्द्र सिंह	अलवर

राजस्थान की किस रियासत को पं. जवाहर लाल नेहरू ने विश्व का आठवाँ आश्चर्य कहा था?

[पटवार मुख्य परीक्षा 24.12.2016]

(a) झालावाड़ (b) कोटा
(c) जैसलमेर (d) बीकानेर

उत्तर (c) व्याख्या:-

- भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने जैसलमेर को विश्व का आठवां आश्चर्य कहा है।
- जैसलमेर को राजस्थान का अण्डमान भी कहा जाता है।
- जैसलमेर रियासत के विलय पत्र पर रघुनाथ सिंह ने हस्ताक्षर किये थे।

राजस्थान की किस रियासत ने सरदार पटेल द्वारा रियासतों के भारत में विलय की नीति के विरुद्ध पाकिस्तान में सम्मिलित होने का प्रयास किया?

[प्राध्यापक एवं कोच परीक्षा (ग्रुप-बी) – 23.06.2025]

(a) बीकानेर
(b) जैसलमेर
(c) जोधपुर
(d) जयपुर

उत्तर (c) व्याख्या:-

- राजस्थान की जोधपुर रियासत के महाराजा हनुवंत सिंह ने सरदार पटेल द्वारा रियासतों के भारत में विलय की नीति के विरुद्ध पाकिस्तान में सम्मिलित होने का प्रयास किया।

रियासतों से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए 'रियासती विभाग' की स्थापना कब की गई?

[Patwar Main 24.12.16]

(a) 4 जनवरी, 1947 ई.
(b) 10 अक्टूबर, 1946 ई.
(c) 5 जुलाई, 1947 ई.
(d) 31 मार्च, 1948 ई.

20 प्रमुख व्यक्तित्व

स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीद सागरमल गोपा कहाँ के निवासी थे?

Lab Assistent (Home Sci.) – 30.06.2022

(a) बीकानेर (b) जैसलमेर
(c) जोधपुर (d) अजमेर

उत्तर (b) व्याख्या:–

सागरमल गोपा (1900-1946 ई.)

- स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीद सागरमल गोपा जैसलमेर के निवासी थे।
- सागरमल गोपा ने जैसलमेर राज्य की कुशासन प्रथा, सामन्ती अत्याचार और जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई।
- सागरमल गोपा ने 1915 ई. में अपने मित्रों के साथ मिलकर जैसलमेर में सर्वहितकारी वाचनालय की स्थापना की।
- जैसलमेर व हैदराबाद रियासतों ने सागरमल गोपा के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- 24 मई 1941 ई. को राजद्रोह के आरोप में सागरमल गोपा को 6 वर्ष की कठोर कारावास की सजा दी गई।
- 03 अप्रैल 1946 को जेलर गुमानसिंह ने गोपा को जैसलमेर जेल में जिन्दा जला दिया।
- 04 अप्रैल 1946 ई. को सागरमल गोपा की जेल में मृत्यु हो गई।
- सागरमल गोपा की हत्या की जॉच के लिए 'गोपाल स्वरूप पाठक' आयोग का गठन किया गया।
- सागरमल गोपा के नाम पर इंदिरा गाँधी नहर की एक शाखा को नामित किया गया है।

'सागरमल गोपा' को राजद्रोह के आरोप में कितने वर्ष की कठोर कारावास की सजा दी गई?

JEN (विद्युत) डिग्री– 29.11.2020

(a) 12 वर्ष (b) 20 वर्ष
(c) 6 वर्ष (d) आजीवन कारावास

उत्तर (c) व्याख्या:–

- उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

'जैसलमेर राज्य की गुण्डा शासन' नामक पुस्तक किसने लिखी?

[CET: 08.01.2023 (S-1)]

(a) समर्थदास (मनीषी) (b) डॉ. सीताराम लालसा
(c) डॉ. सुधीन्द्र (d) सागरमल गोपा

उत्तर (d) व्याख्या:-

सागरमल गोपा की पुस्तकें -

1. जैसलमेर का गुण्डाराज
2. रघुनाथ सिंह का मुकदमा
3. आज़ादी के दीवाने

एक स्वतंत्रता सैनानी द्वारा एक काव्य पाठ 'नौ रत्नों के पंजों से बचो भूप जवाहर तुम, जैसाण के किले पे तिरंगा पाओगे।' एक राजा के दरबार में किया गया। यहाँ जैसाण का अर्थ है?

[छात्रावास अधीक्षक परीक्षा, 2008]

(a) जोधपुर (b) जैसलमेर
(c) जैतारण (d) जसवन्तगढ़

उत्तर (b) व्याख्या:–

- यहां पर जैसाण का अर्थ जैसलमेर है।
- जैसलमेर को जैसाणगढ, राजस्थान का अण्डमान व विश्व का आठवां आश्चर्य नाम से भी जाना जाता है।
- प्राचीनकाल में जैसलमेर को 'मांड क्षेत्र' के नाम से जाना जाता था।

जेल में अन्याय के खिलाफ भूख हड़ताल के कारण मारवाड़ लोक परिषद के किस नेता की मृत्यु 19 जून, 1942 को हुई?

CET- 8.1.2023 (I)

(a) रणछोड़ दास गट्टानी (b) आनंद राज सुराणा
(c) भंवर लाल शर्मा (d) बाल मुकुंद बिस्सा

उत्तर (d) व्याख्या:–

बाल मुकुंद बिस्सा -

- मारवाड़ लोक परिषद के प्रसिद्ध कार्यकर्ता बाल मुकुंद बिस्सा का जन्म 1908 ई. में पीलवा (डीडवाना) नामक स्थान पर हुआ था।
- इसने नागौर में चरखा संघ व खद्दर भंडार की स्थापना की।
- 1942 ई. में जयनारायण व्यास के नेतृत्व में शुरू हुए जनान्दोलन के दौरान बिस्सा को 09 जून 1942 ई. को भारत रक्षा कानून के अंतर्गत बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया।
- 19 जून 1942 ई. को जोधपुर जेल में भूख हड़ताल के दौरान बाल मुकुंद बिस्सा की मृत्यु हो गई।
- बाल मुकुंद बिस्सा को 'राजस्थान के जतिनदास' के नाम से भी जाना जाता है।

'राजस्थान के जतिनदास' कहलाते हैं-

कनिष्ठ अनुदेशक-10.09.2022

(a) बालमुकुन्द बिस्सा (b) प्रतापसिंह बारहठ
(c) नाना भाई खांट (d) जोरावर सिंह बारहठ

उत्तर (a) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

प्रजामण्डल आन्दोलन के दौरान जोधपुर जेल में अव्यवस्था व अन्याय के विरुद्ध भूख हड़ताल करने के कारण स्वास्थ्य खराब हो जाने से 19 जून, 1942 ई. को किस स्वतंत्रता सेनानी की मृत्यु हुई?

[II Grade (Urdu) Exam. 2011]

(a) भँवरलाल सर्राफ (b) मथुरादास माथुर
(c) बालमुकुन्द बिस्सा (d) आनन्दमल सुराणा

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निम्न में से किसने राव गोपाल सिंह खरवा को प्रभावित किया था?

राज. पुलिस कॉन्स्टेबल-13.5.2022 (I)

(a) ब्रह्म समाज (b) आर्य समाज
(c) वर्धमान शैली (d) रामकृष्ण मिशन

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ प्रसिद्ध क्रांतिकारी राव गोपाल सिंह खरवा को आर्य समाज ने प्रभावित किया था।
➢ राव गोपाल सिंह को राजस्थान में 'सशस्त्र क्रांति का जनक' कहा जाता है।
➢ रास बिहारी बोस ने 21 फरवरी 1915 ई. को सम्पूर्ण भारत में एक साथ सशस्त्र क्रांति के आयोजन की योजना बनाई।
➢ रास बिहारी बोस ने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति की जिम्मेदारी राव गोपाल सिंह खरवा को सौंपी तथा इनके सहयोग के लिए विजयसिंह पथिक को राजस्थान भेजा।
➢ गोपालसिंह खरवा को टॉडगढ व तिहाड़ जेल में नजरबंद रखा गया था।
➢ 1989 ई. में राव गोपाल सिंह खरवा पर 60 पैसे का डाक टिकिट जारी किया गया।

किस स्वतंत्रता सेनानी ने ब्रिटिश के खिलाफ विद्रोह आयोजित किया और उन्हें टॉडगढ़ किले में चार साल की सजा सुनाई गई?

VDO Exam-2025 - 02.11.2025

(a) सागरमल गोपा (b) प्रताप सिंह बहारत
(c) राव गोपाल सिंह खरवा (d) दौलत मल भंडारी

उत्तर (c) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

उस क्रांतिकारी का नाम बताइए जो रास बिहारी बोस और अन्य के प्रभाव में राजस्थान में सशस्त्र विद्रोह शुरू करना चाहता था।

Roadways Cnductor 06.11.2025

(a) अर्जुन लाल सेठी (b) प्रताप सिंह बारहठ
(c) विजय सिंह पथिक (d) राव गोपाल सिंह

उत्तर (d) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान के किस क्रांतिकारी को तिहाड़ जेल में रखा गया था?

REET L-II, 26.09.2021

(a) अर्जुनलाल सेठी (b) गोपाल सिंह खरवा
(c) केसरी सिंह बारहठ (d) प्रतापसिंह बारहठ

उत्तर (b) व्याख्या:-
➢ उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

राजस्थान के जयपुर में राजनीतिक चेतना को सर्वप्रथम जन्म देने वाले थे?

Food Safety Officer - 27.06.2023

(a) विजयसिंह पथिक (b) अर्जुन लाल सेठी
(c) सेठ दामोदर दास (d) सहसमल बोहरा

उत्तर (b) व्याख्या:-

अर्जुन लाल सेठी (1880-1941 ई.)

➢ **जन्म –** जयपुर (दिगम्बर जैन परिवार में)
➢ **उपनाम –** राजस्थान का दधीचि, राजस्थान का बाल गंगाधर तिलक व राजस्थान / जयपुर में जनजाग्रति का जनक
➢ अर्जुनलाल सेठी ने महाराजा कॉलेज जयपुर से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद चौमूं ठाकुर देवी सिंह के निजी सचिव के रूप में अपना करियर प्रारंभ किया।
➢ उन्होनें मथुरा में एक जैन विद्यालय में अध्यापक के रूप में भी काम किया।
➢ जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने इन्हें राज्य के प्रधानमंत्री पद की पेशकश की तो इन्होनें यह कहते हुए ठुकरा दिया कि 'अर्जुनलाल सेठी नौकरी करेगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा।'
➢ अर्जुनलाल सेठी ने काकोरी ट्रेन एक्शन (1925 ई.) के मुख्य आरोपी अशफाक उल्ला खां को शरण प्रदान की थी।
➢ सेठी ने अपना अंतिम भाषण सामाजिकता पर दिया था।
➢ जीवन के अंतिम दिनों में यह अजमेर के एक मदरसे में अरबी-फारसी पढ़ाया करते थे।

विज्ञापन

सफलता की चाबी
राजस्थान परीक्षा हेतु PYQ's सीरीज़

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर के विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में,
अक्षांश प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

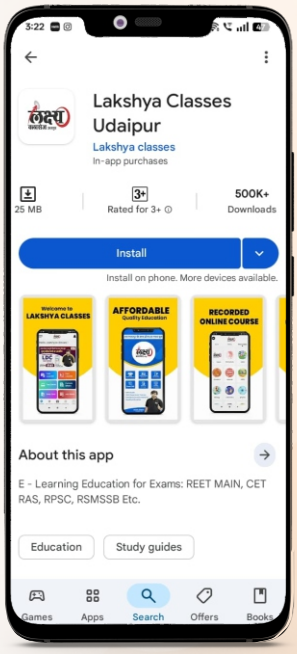

Scan to Download
Lakshya App Now

Google play

MRP: ₹199

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

S.No. APO053 CODE : APDO(35) NRT

राजस्थान के सभी बुक स्टोर्स एवं लक्ष्य क्लासेज एप्लीकेशन पर उपलब्ध!

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur